यीशु का सामर्थी नाम

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2025

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे “ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता” पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons**।** **पुस्तकें:** apcwo.org/books**।** **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org**।** **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org **।** **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org**।** **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi–The Mighty Name of Jesus)

यीशु का सामर्थी नाम

वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

कुलुस्सियों 3:17

विषयसूची

परिचय

1. सब नामों से श्रेष्ठ नाम 1

2. नाम के पीछे जो व्यक्ति है 8

3. परमेश्वर के नाम के पुराने नियम के प्रकाशन 18

4. मेरे पिता के नाम में 34

5. यीशु के नाम का सही उपयोग 44

6. यीशु के नाम में परमेश्वर पवित्र आत्मा यहां है 51

7. जब हम यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं तब क्या होता है 55

8. यीशु के नाम पर विश्वास करें 62

9. यीशु के नाम में 67

10. यीशु के नाम में क्षमा 72

11. यीशु के नाम में उद्धार 74

12. यीशु के नाम में अनंत जीवन 76

13. यीशु के नाम में धोए गए, पवित्र हुए, धर्मी ठहरे 78

14. यीशु के नाम में बपतिस्मा पाना 80

15. यीशु के नाम में प्रार्थना करें 84

16. यीशु के नाम में धन्यवाद दें और आराधना करें 86

17.यीशु के नाम में सब बातों को करें 89
18.हम यीशु के नाम में इकट्ठा होते हैं 92
19.यीशु के नाम में एक दूसरे को ग्रहण करें, आदर दें और आशीष दें 94
20.यीशु के नाम में प्रचार करें, सिखाएं और सेवा करें 98
21.यीशु के नाम में चंगा करें 101
22.यीशु के नाम में अद्‌भुत कामों को करें 103
23.यीशु के नाम में दुष्टात्माओं को निकालें 105
24.यीशु के नाम में बड़े कामों को करें 108
25.यीशु के नाम का अनधिकृत उपयोग 111
26.यीशु के नाम के लिए सताए गए 114
27.यीशु के नाम के लिए बलिदान 116
28.हम यीशु के नाम को लेकर चलते हैं 118
29.यीशु के नाम में समझाएं 120
30.यीशु का नाम सदा के लिए है 123

परिचय

प्रत्येक विश्वासी को यीशु के सामर्थी नाम को पुकारने, उस नाम से बोलने और उसका उपयोग करने का अद्‌त विशेषाधिकार प्राप्त हुआ है। यीशु के चेलों और प्रारंभिक कलीसिया के विश्वासियों ने उस अधिकार को समझा जो यीशु के नाम के उपयोग के माध्यम से उन्होंने पाया था, और वे उसमें चले।

यह पुस्तक विश्वासी को यीशु के नाम की सामर्थ को फिर से खोजने में मदद करने का प्रयास करती है और सिखाती है कि रोज़मर्रा की जिंदगी में उस नाम की सामर्थ में कैसे चलना है। जब हम यीशु के नाम की सामर्थ में चलना सीखते हैं तब हम अधिकार और प्रभुता में, पूर्ण शांति और परमेश्वर के सभी प्रावधानों में चल सकते हैं।

यीशु! वह नाम जो हमारे डर को मंत्रमुग्ध कर देता है,
जिससे हमारे दुःख समाप्त हो जाते हैं;
पापी के कानों में वह संगीत है,
वह जीवन, और स्वास्थ्य, और शांति है।

(चार्ल्स वेस्ली द्वारा 1739 मे लिखे गए गीत *“ओ फॉर ए थाऊजंड़ टंग्स टू सिंग”* से)

विश्वासियों के रूप में हम जीवन में व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करते हैं। चाहे वह जीवन की परिस्थितियों से संबंधित हों, जरूरतें जो सामने आती हैं, तूफान जो उठते हैं, हमारे रास्ते में आने वाले पहाड़, रोग और बीमारी जो हम पर आती है, चीजें जो दुश्मन हमारे खिलाफ प्रयास करते हैं, हमें पता होना चाहिए कि हम में निहित अधिकार के माध्यम से हम उठ कर उन पर प्रभुता पा सकते हैं।

हमें पता होना चाहिए कि यह अधिकार यीशु के नाम के उपयोग के माध्यम से हमारा है।

जब हम अपने आस-पास के लोगों की सेवा करते हैं, हमें यीशु के नाम में ऐसा हियाव के साथ करना चाहिए। प्रभु यीशु ने हमें अपने कार्यों को करने के लिए उसके नाम का उपयोग करने और पूरी तरह से उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए अधिकार दिया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि संपूर्ण कलीसिया इस महत्वपूर्ण सत्य को केवल "सतही तौर पर जान रही है।" हम विश्वासियों की एक पीढ़ी बनें जो यीशु के नाम में हमारे विशेषाधिकारों और अधिकार की खोज करते हैं और रोज़मर्रा की जिंदगी में इसके प्रदर्शन में चलते हैं, जैसा पहले कभी नहीं हुआ। आइए हम उन सभी के प्रदर्शन में आगे बढ़ें जो यीशु के सामर्थी नाम में हमारे लिए उपलब्ध हैं, हमसे पहले की पीढ़ियों की तुलना में अधिक।

यीशु के सामर्थी नाम पर यह अध्ययन आपके जीवन को समृद्ध करे ताकि आप अपने निजी जीवन में उस नाम की सामर्थ में चल सकें! ऐसा हो कि आप अनगिनत अन्य लोगों को यीशु मसीह से भेंट करने की आशीष प्रदान करें!

परमेश्वर आपको आशीष दे!

आशीष रायचूर

1
सब नामों से श्रेष्ठ नाम

एक शाही परिवार में पैदा हुए बच्चे की कल्पना करें। बच्चे को एक नाम दिया गया है। जबकि इसी नाम वाले अन्य कई लोग हो सकते हैं, इस विशेष बच्चे को उस नाम से विशिष्ट रूप से पहचाना जाता है। और भी है। शाही परिवार में पैदा हुए इस बच्चे को राजसी गौरव और शाही सिंहासन और शाही परिवार का प्रतिनिधित्व करने वाली सभी चीजेंद्र विरासत में मिलती हैं। बच्चे के नाम के साथ एक शाही उपाधि जुड़ी होती है जो विरासत में मिले राजसी शान या गौरव को पहचानती है। राज्य के सभी संसाधन, प्रभाव और सामर्थ अब उस नाम के पीछे हैं। समय के साथ बच्चा वयस्क हो जाता है। मान लीजिए कि यह बड़ा हो गया व्यक्ति अब उल्लेखनीय रूप से उत्कृष्ट जीवन जीता है, बड़ी बड़ी बातें हासिल करता है, और उन उपलब्धियों के लिए महान सम्मान, प्रसिद्धि और ख्याति प्राप्त करता है। अब इस नाम की महानता का एक और आयाम है। लोग अब न केवल इस नाम को पहचानते हैं और सम्मान करते हैं क्योंकि यह विशिष्ट व्यक्ति की पहचान है, या उस नाम से जुड़े राज्य और राजसी वैभव, गौरव के कारण, बल्कि शायद इससे भी अधिक, उस नाम के पीछे व्यक्ति की महानता, उपलब्धियों और सफलताओं के कारण।

इन तीनों पहलुओं को पवित्र शास्त्र में यीशु के नाम के विषय में देखा गया है।

जन्म के समय पिता द्वारा उसे दिया गया एक नाम

मत्ती 1:21

वह पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों

का उनके पापों से उद्धार करेगा।"

"यीशु" नाम वह नाम था जिसे परमेश्वर ने चुना और परमेश्वर के अद्वितीय देहधारी पुत्र की पहचान करने के लिए दिया। परमेश्वर के रूप में, अनंत वचन ने मानव रूप धारण किया और देहधारी वचन बन गया, पिता ने उसे एक नाम दिया – "यीशु" । उसने यूसुफ को यह घोषणा करने के लिए एक स्वर्गदूत को भेजा। यह उसके जन्म के समय पिता द्वारा उसे दिया गया नाम था।

यीशु हिब्रू का ग्रीक रूप है: *"यहोशुवा"* जिसका अर्थ है "उद्धारकर्ता" या "परमेश्वर जो मुक्ति है।" इसलिए जब हम "यीशु" के नाम का उल्लेख करते हैं तो हम उस नाम की घोषणा कर रहे हैं जो उद्धार लाता है।

मत्ती 1:21 में "उद्धार" ग्रीक क्रिया *'सोज़ो'* है जो (जैसा कि *सोटेरिया*, "उद्धार" के साथ है) एक व्यापक शब्द है जिसमें सनातन उद्धार, पापों की क्षमा, पाप पर विजय, रोग से चंगाई, संघर्ष में जीत, दुश्मन के हर काम से मुक्ति, हानि से बचाव, खतरे से सुरक्षा और संपूर्ण पूर्णता शामिल है। इसका अर्थ है "बचाया जाना, चंगाई पाना, छुटकारा पाना, विजयी होना, बचाया जाना, सुरक्षित किया जाना और संपूर्ण बनाया जाना।"

नए नियम में *'सोज़ो'* शब्द का इस्तेमाल कई अलग अलग तरह से किया गया है।

यहां कुछ संदर्भ हैं।

- पाप से **उद्धार** (मत्ती 1:21; इब्रानियों 7:25)
- **अनंत काल का उद्धार** (यूहन्ना 3:16-18; मरकुस 16:16; प्रेरितों के काम 4:12; रोमियों 10:9,10; इफिसियों 2:8)

- **चंगाई** (मत्ती 9:22; मरकुस 6:56; मरकुस 10:52; याकूब 5:15)
- दुष्टात्मा की सामर्थ से **छुटकारा** (लूका 8:36; यहूदा 1:5, "छुड़ाना" शब्द है *'सोज़ो'*)
- खतरे से **रक्षा / सुरक्षा** (मत्ती 8:25; मत्ती 14:30; मत्ती 27:42; 2 तीमुथियुस 4:18 "छुड़ाएगा" शब्द है *'सोज़ो'*)
- आत्मिक संघर्ष / खतरे से **सुरक्षा** (यूहन्ना 12:27; 1 तीमुथियुस 4:16)
- गुलामी या दासत्व से **आज़ादी** (यहूदा 1:5)

जब हम "यीशु" नाम का उल्लेख करते हैं और उसे उद्धारकर्ता के रूप में घोषित करते हैं, तब हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि वह न केवल पाप से बचाता है, बल्कि उस नाम में उद्धार, संरक्षण, सुरक्षा, चंगाई, मुक्ति, विजय, स्वतंत्रता और पूर्णता है। उस नाम में ही पूर्ण उद्धार है। यीशु का नाम बचाता है, संरक्षित करता है, रक्षा करता है, चंगा करता है, उद्धार करता है, विजय लाता है, स्वतंत्रता देता है और संपूर्ण बनाता है!

उसे यह नाम विरासत में मिला

इब्रानियों 1:1-4

1 पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके,

2 इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।

3 वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा,

4 और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।

परमेश्वर सनातन वचन, जिसके माध्यम से जगत का निर्माण हुआ और जो अपने सामर्थी वचन द्वारा सभी वस्तुओं को संभालता है, उसने देहधारी शब्द बनना चुना और परमेश्वर के पुत्र के रूप में जीवन बिताया। परमेश्वर के पुत्र के रूप में वह परमेश्वर था जो हमसे बात कर रहा था। वह पिता की महिमा का प्रदर्शन और पिता का सटीक प्रतिनिधित्व था। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, उसने हमारे सभी पापों को शुद्ध करने का प्रयोजन किया, जिलाया गया और अब पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है, जो स्वर्गदूतों से बहुत ऊपर है। यह परमेश्वर का पुत्र है जिसे सभी वस्तुओं का उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया था और उसने विरासत में एक ऐसा नाम प्राप्त किया है जो किसी भी अन्य नामों की तुलना में कहीं अधिक बड़ा, अधिक अद्‌त, असीम रूप से श्रेष्ठ और बहुत ऊंचा नाम है। स्वर्गदूतों के नाम भी अद्‌त होते हैं (न्यायियों 13:18)। परन्तु यह नाम, यीशु का नाम उन सब से बढ़कर है।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, एक राज्य में एक वारिस को शाही गौरव विरासत में मिलता है। परमेश्वर का सारा राज्य यीशु के नाम के पीछे खड़ा है। वह सब जो परमेश्वर है, उसका सारा वैभव, महिमा, प्रभुत्व और सामर्थ यीशु के नाम के पीछे है। यह नाम स्वर्गीय राजपरिवार को दिखाता है। यह नाम उच्चतम राजवैभव का प्रतिनिधित्व करता है। उससे ऊंचा कोई शक्तिशाली, शासक या राजा नहीं है। यह उसका नाम है जो सब चीज़ों का वारिस है, *"जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है"* (1 तीमुथियुस 6:15)। यह उसका नाम है जो *"महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए"* (इब्रानियों 2:9) है । इस नाम के पीछे सर्वोच्च सिंहासन और राज्य है जो अन्य सभी पर शासन करता है। *"यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है"* (भजन संहिता 103:19)।

उसने जो कुछ किया उस कारण उसे दिया गया नाम

फिलिप्पियों 2:5-11

5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो,
6 जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वष में रखने की वस्तु न समझा।
7 वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।
8 और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।
9 इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है,
10 कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

यह कितना गहरा है: *"इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है"* (व. 9)। यीशु ने अपने देहधारण, पृथ्वी के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा जो हासिल किया, उस कारण उसे *"अति महान किया गया।"* उसने सारे संसार के पापों का भुगतान किया। उसने पाप के पतन को उलट दिया, शैतान और उसकी सभी दुष्टात्माओं को निहत्थे कर दिया, कुचल दिया और नष्ट कर दिया और कब्र से विजयी हो गया। उसके पास नरक और अधोलोक की कुंजियां (अधिकार, प्रभुत्व) हैं (प्रकाशितवाक्य 1:18)।

शब्द *"अति महान किया"* (ग्रीक *'हुपरुपसो'*) का अर्थ है "दूसरों से ऊपर उठना, सर्वोच्च पद पर चढ़ना, सर्वोच्च पद और सामर्थ को ऊंचा करना, सर्वोच्च महिमा को पाना।" पिता ने *"उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर, सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक*

नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया" (इफिसियों 1:20-22)। स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार यीशु के पास है (मत्ती 28:18)। यीशु का नाम ऐसे ही का है। यह नाम सब नामों के ऊपर है, क्योंकि वह सबके ऊपर है।

सब नामों से श्रेष्ठ

फिलिप्पियों 2:9-11

9 इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है,
10 कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

परमेश्वर पिता ने तय किया है, फैसला सुनाया है और घोषणा की है कि यीशु के नाम के उल्लेख पर, तीनों लोक में हर घुटना झुकेगा। स्वर्ग, पृथ्वी और अधोलोक में हर सृष्ट प्राणी उसके अधीन होगा, उसका आदर करेगा और हर जीभ उसके प्रभुत्व को स्वीकार करेगी, उसे राजा के रूप में पहचानेगी।

यीशु का नाम सभी नामों से ऊपर है। उसका नाम *"सब नामों में श्रेष्ठ"* है (वचन 9, टीपीटी) है।

चिंतन

1) देहधारी वचन, परमेश्वर के पुत्र को "यीशु" को

(अ) जन्म के समय यह नाम दिया गया था,

(आ) उसे वह नाम विरासत में मिला और

(इ) उसे उसकी उपलब्धियों के कारण वह नाम दिया गया।

इन तीन पहलुओं में से प्रत्येक के महत्व पर चर्चा करें और यह भी बताएं कि कैसे वे इस नाम को सभी नामों में सबसे श्रेष्ठ बनाते हैं।

2
नाम के पीछे जो व्यक्ति है

हम मानते हैं कि किसी नाम की महानता उस नाम के पीछे के व्यक्ति की महानता से प्राप्त होती है। नाम उतना ही महान होता है जितना कि नाम के पीछे की व्यक्ति। जब हम नाम के पीछे व्यक्ति की महानता को पहचानेंगे, तब हम उसके नाम की महानता को पहचानेंगे। जब आप उस व्यक्ति यीशु मसीह को जानेंगे, तो आपको उसके नाम में बहुत भरोसा होगा।

इस अध्याय में हम यीशु मसीह की महानता पर ध्यान करते हैं, जो उस नाम के पीछे की व्यक्ति है। यह निश्चित रूप से यीशु कौन है इस बारे में संपूर्ण निबंध नहीं है, परन्तु एक संक्षिप्त सारांश है, ताकि हमें उस व्यक्ति का स्मरण हो जिसके नाम के बारे में हम अध्ययन कर रहे हैं। आप इसमें उसकी महानता के बारे में विचार को जोड़ सकते हैं जो "यीशु" नाम के पीछे खड़ा है।

यीशु का नाम जिसका प्रतिनिधित्व करता है उसके कारण महान है—व्यक्ति यीशु, वह जो है, उसने जो किया है, उसने जो हासिल किया है और आने वाले समय में वह जो हासिल करेगा।

यहोवा—"यीशु" उसका नाम है जो त्रिएक परमेश्वर में है। उसे "सामर्थी परमेश्वर *(एल गिब्बोर),*" "सनातन पिता" भी कहा गया है (यशायाह 9:6)। वह पिता और आत्मा के साथ बराबरी में और एक है (1 यूहन्ना 5:7)। वह परमेश्वरत्व का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है (कुलुस्सियों 1:19; कुलुस्सियों 2:9)। वह पिता और आत्मा के समान यहोवा है (यूहन्ना 1:1-3; यूहन्ना 20:28; रोमियों 9:5; 1 तीमुथियुस 3:16; तीतुस 1:3,4;

इब्रानियों 1:8)। वह महान **मैं हूं** है (यूहन्ना 8:58); वह इम्मानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ (यशायाह 7:14; मत्ती 1:23)। यीशु के नाम को पुकारना यहोवा परमेश्वर, सनातन, स्वयंभू, अपरिवर्तनीय परमेश्वर को पुकारना है जो वाचा का पालन करता है।

यीशु के नाम को पुकारना
यहोवा परमेश्वर सनातन, स्वयंभू,
अपरिवर्तनीय परमेश्वर को पुकारना है
जो वाचा का पालन करता है।

सनातन वचन—"यीशु" नाम सनातन वचन का नाम है जो परमेश्वर के साथ था और जो परमेश्वर था (यूहन्ना 1:1,2)। वह सदा के लिए परमेश्वर का वचन है (प्रकाशितवाक्य 19:13)। दृश्य और अदृश्य संसार में जो वस्तुएं हैं वे उसी के द्वारा, उसी के माध्यम से और उसके लिए निर्मित हैं (यूहन्ना 1:3; इफिसियों 3:9; कुलुस्सियों 1:16)। आरम्भ, आरम्भकर्ता, हर वस्तु का स्रोत, क्योंकि सारी वस्तुएं उसी से, उसी के द्वारा और उसी के माध्यम से आती हैं (प्रकाशितवाक्य 3:14)। वह सब वस्तुओं के पहले है, और सब वस्तुओं को सम्भालने वाला, पोषणकर्ता, नियमन करने वाला, और पूरा करने वाला है (कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 1:3)। यीशु के नाम में निर्माण करने, सम्भालने, नियमन करने, नियंत्रण करने, व्यवस्थित करने की सामर्थ है, दृश्य और अदृश्य (प्राकृतिक और आत्मिक) जगत में सबकुछ।

परमेश्वर का पुत्र—"यीशु" नाम परमेश्वर का नाम है जो मनुष्य बन गया और पृथ्वी पर परमेश्वर के पुत्र के रूप में चला। इसके जैसा व्यक्ति कभी नहीं रहा, और न कभी होगा। वह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है जो हम पर प्रगट किया गया (2 कुरिन्थियों 4:4; कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:3)। वह हमें देखने के लिए पिता की महिमा की

अभिव्यक्ति है (यूहन्ना 1:14; इब्रानियों 1:3)। वह पिता के साथ एक है ताकि जब हम उसे देखते हैं तब हम पिता को देखते हैं (यूहन्ना 10:30; यूहन्ना 14:7,9)। उसने पिता के वचन कहे, पिता के काम किए, पिता की इच्छा पूरी की (इब्रानियों 10:7)। वह यहां पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य ले आया (मत्ती 4:17)। वह सारी वस्तुओं का वारिस है और वही है जिसने सारी वस्तुओं को मिरास में पाया है (इब्रानियों 1:2,8)। उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा और मरे हुओं में से जिलाए जाने के द्वारा परमेश्वर के पुत्र के रूप में दिखाया गया (रोमियों 1:4)। उसकी भरपूरी से, उसने हम पर बेपरिमाण अनुग्रह उण्डेल दिया (यूहन्ना 1:16; रोमियों 5:17)। यीशु के नाम का उल्लेख पिता की महिमा को प्रगट करता है, पिता की इच्छा को स्थापित करता है और पृथ्वी पर हमारे लिए स्वर्ग को जारी करता है।

परमेश्वर का मेम्ना—"यीशु" नाम निष्पाप, निष्कलंक, सिद्ध परमेश्वर के मेम्ने का नाम है केवल वही जगत के पापों को मिटाने की योग्यता रखता है (यूहन्ना 1:29; प्रकाशितवाक्य 5:6)। वह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत की उत्पत्ति से पहले वध किया गया था (1 पतरस 1:18-20; प्रकाशितवाक्य 13:8)। हमारे समान हर बात में उसकी भी परीक्षा हुई, और फिर भी वह पापरहित पाया गया (इब्रानियों 4:15)। उसका लहू पवित्र, पापरहित और शुद्ध है। परमेश्वर के सामने स्वर्गीय महापवित्र स्थान में चढ़ाए गए उसके लहू ने हमारा छुटकारा प्राप्त किया (इब्रानियों 9:11,12)। उसने हमें अपने लहू से खरीदा और छुड़ा लिया और हमें परमेश्वर के सामने राजा और याजक बनाया (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:13,14; 1 पतरस 1:18; 1 कुरिन्थियों 6:20; प्रकाशितवाक्य 1:5,6)। वह फसह का मेम्ना है (1 कुरिन्थियों 5:7) जिसका लहू हमें छिपाता है और हमारी रक्षा करता है और शैतान से हमें छुटकारे की घोषणा करता है। जब हम घोषणा करते हैं कि परमेश्वर के मेम्ने के लहू ने हमारे लिए क्या किया है, तब हम शैतान और दुष्टात्माओं पर जय पाते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:11)। वह हमेशा सिंहासन पर विराजमान

परमेश्वर का मेम्ना होगा (प्रकाशितवाक्य 22:3)। यीशु के नाम में हमारे पाप क्षमा किए गए हैं। हमें यीशु के नाम में धोया गया है, पवित्र किया गया है, धर्मी ठहराया गया है। यीशु के नाम में हमने पूर्ण छुटकारा पाया है और शैतान का हम पर कोई दावा नहीं है और हम में उसे कोई स्थान नहीं है।

अभिषिक्त मसीह—"यीशु" का नाम मसीह, ख्रीष्ट, पवित्र अभिषिक्त का नाम है (दानिय्येल 9:25; भजन संहिता 2:2,7; मत्ती 16:16,17; यूहन्ना 4:25,26)। वह सेवक है जिसके बारे में यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी (यशायाह 42:1; यशायाह 49:6; यशायाह 52:13; यशायाह 53:11; मत्ती 12:18)। अभिषिक्त और उसका अभिषेक दुष्टात्मा के हर उत्पीड़न के बोझ को हटाता है और शैतान के हर जुए को नष्ट करता है (यशायाह 10:27)। यीशु के नाम में दुष्टात्मा का हर दबाव हटाया जाता है और शैतान का हर जुआ नष्ट होता है।

जगत की ज्योति—"यीशु" का नाम उसका नाम है जो सच्ची ज्योति है (यूहन्ना 1:9)। वह भोर का प्रकाश है (लूका 1:78), भोर का तारा है (2 पतरस 1:19; प्रकाशितवाक्य 2:28; प्रकाशितवाक्य 22:16)। वह जगत की ज्योति है (यूहन्ना 8:12)। उसकी ज्योति अंधकार में चमकती है, अंधकार, निराशा और हताशा को मिटाती है; और अंधकार उसे किसी रीति से कम नहीं कर सकता या ज्योति के सामने खड़े नहीं रह सकता। यीशु के नाम मे अंधकार का प्रत्येक काम, अंधकार द्वारा तैयार किया गया या रचाया गया हर कार्य नाश किया जाता है और दूर किया जाता है। उसके सामर्थी नाम के आगे अंधकार पीछे हट जाता है।

अच्छा चरवाहा—"यीशु" का नाम अच्छे चरवाहा का नाम है (यूहन्ना 10:11), भेड़ों का महान रखवाला (इब्रानियों 13:20), चरवाहा और हमारे प्राणों का रखवाला (1 पतरस 2:25) और प्रधान रखवाला

(1 पतरस 5:4)। वह बड़े प्रेम के साथ अपनी भेड़ों की अगुवाई, मार्गदर्शन करता है उनका पोषण करता है, उन्हें सांत्वना देता है, चंगा करता है, जी में जी ले आता है, रक्षा करता है, और अपनी भेड़ों की रखवाली करता है। यीशु के नाम में, हम जो उसकी भेड़ें हैं सुरक्षित हैं, बचाई गई हैं, और कोई भी हमें उसके हाथ से छीन नहीं सकता।

मार्ग, सत्य और जीवन—"यीशु" का नाम उसका नाम है जो पिता की ओर जाने का मार्ग है (यूहन्ना 14:6)। वह द्वार है (यूहन्ना 10:7)—राज्य में प्रवेश का एकमात्र बिन्द है। वह सत्य है। झूठ, छल, विवाद, और तर्क उसके सामने निर्बल होते हैं। वह सत्य है और वही सचमुच लोगों को आज़ाद करता है (यूहन्ना 8:31,32,36)। वह जीवन है—जीवन की रोटी अनंत जीवन का स्रोत है (यूहन्ना 6:33,35,48-51)। वह जीवन का जल है (यूहन्ना 4:10,14; यूहन्ना 7:37,38; प्रकाशितवाक्य 21:6; प्रकाशितवाक्य 22:17)। वह जीवन देता है और बहुतायत का जीवन देता है (यूहन्ना 10:10)। उसमें हमारी प्यास बुझाई जाती है और हमारी गहरी से गहरी इच्छाएं तृप्त होती हैं। यीशु के नाम में खोए हुए मार्ग पाते हैं, सत्य आगे बढ़ता है, छुड़ाता है, और राज्य करता है, और पाप में मरे हुए अनंत जीवन को, परमेश्वर सदृश्य जीवन को अनुभव करेंगे।

उद्धारकर्ता—"यीशु" नाम जगत के उद्धारकर्ता का नाम है (मत्ती 1:21; लूका 2:11; 1 तीमुथियुस 1:15; 1 यूहन्ना 4:14)। उसने सारे संसार के पापों को उठा लिया (यशायाह 53:4; 1 यूहन्ना 2:2), जो कीमत हमें चुकाना था उसने चुकाई और हमारी ओर से नर्क गया, ताकि हमें सेंतमेंत क्षमा मिले। यीशु के नाम में हमारे पाप क्षमा किए गए हैं और हम बचाए गए हैं। उसके नाम में उद्धार है!

चंगाईकर्ता—"यीशु" नाम महान वैद्य का नाम है, जो हमें हर रोग और बीमारी से चंगा करता है (मत्ती 4:23-25)। उसने लंगड़ों को चलाया,

अंधे देखने लगे, गूंगे बोलने लगे, लंगड़े और अपंग स्वस्थ हो गए और लोगों ने हर बीमारी और रोगों से चंगाई प्राप्त की (मत्ती 15:29-31)। उसने हमारे सारे रोगों और बीमारियों और दर्द को क्रूस पर उठा लिया जिससे उसके घावों से हम चंगे हो गए (यशायाह 53:4,5; 1 पतरस 2:24)। वह धार्मिकता का सूर्य है जो हमें चंगाई के साथ अपने पंखों में छिपा लेता है (मलाकी 4:2)। यीशु के नाम में रोग, और बीमारी दूर की जाती है। रोग, अपंगताएं, असामान्यताएं, पुराने से पुराने रोग, असाध्य रोग उस सामर्थी नाम के आगे झुकते हैं जिससे लोग चंगाई पाते हैं।

***शालोम* का राजकुमार—**"यीशु" का नाम उसका नाम है जो *शालोम*, अर्थात शांति का राजकुमार है (यशायाह 9:6)। वह राजा है जो उसके पास आने वाले सभों के लिए स्वास्थ्य ले आता है। हमें *शालोम*—शांति, पूर्ण स्वास्थ्य देने के लिए उसने क्रूस पर दंड सहा (यशायाह 53:5)। वह सिद्ध शांति देता है जो संसार नहीं देता (यूहन्ना 14:27; यूहन्ना 16:33)। यीशु के नाम का उल्लेख पूर्ण *शालोम*, शांति, पूर्ण कल्याण, पूर्ण स्वास्थ्य लाता है। उसका नाम हमारे डर को दूर करता है, भ्रम को दूर करता है, पीड़ाओं को दूर भगाता है और पूर्णता या स्वास्थ्य का प्रबंधन करता है।

आश्चर्यकर्म करने वाला—सारी आशीषों का स्रोत. "यीशु" नाम महान आश्चर्यकर्म करने वाले का नाम है। उसने मरे हुओं को जिलाया, पानी को दाखमधु में बदल दिया, पांच हज़ारों को भोजन खिलाया, हवा और लहरों को शांत किया, जाल में ढेर सारी मछलियां आईं, और कई अन्य चमत्कार किए और आज भी वैसा ही करता है, जैसा कि बाइबल के दिनों में होता था (इब्रानियों 13:8)। वह वही है जिसने हमारी अनाज्ञाकारिता के लिए हर शाप को हटा दिया है, स्वयं क्रूस पर हमारे लिए श्राप बनकर (गलातियों 3:13,14)। उसने इब्राहीम की आशीष को हम पर भेज़ दिया है। मसीह में हम हर उस आशीष से आशीषित होते हैं जो परमेश्वर की ओर से आती है (इफिसियों 1:3)। यीशु के नाम

में आश्चर्यकर्म होते हैं, परिस्थितियां बदल जाती हैं, असंभव संभव हो जाता है, हर अभिशाप दूर हो जाता है और परमेश्वर की आशीष जारी हो जाती है।

छुड़ानेवाला रिश्तेदार, मुक्तिदाता—"यीशु" उसका नाम है जो हमारा छुड़ानेवाला रिश्तेदार, हमारा मुक्तिदाता बना (यशायाह 59:20; रोमियों 11:26)। वह हम में से एक के समान बना (इब्रानियों 2:11,14,15; इब्रानियों 10:5), हमारा खून का भाई, हमारे परिवार का सदस्य ताकि वह हमारी परिस्थिति में कदम रख सके और हमें उसमें से बाहर निकाल सके। यीशु अंतिम आदम है, दूसरा आदम (1 कुरिन्थियों 15:45-47)। वह मनुष्य मसीह यीशु है (1 तीमुथियुस 2:5)। इस मनुष्य ने हमें पतन से छुड़ाया। वह हमें उन सारी बातों से बाहर लेकर आया जो आदम ने हम पर लादी थी। उसने अपने आपको छुटकारे के दाम, सभों के लिए मुक्ति के दाम के रूप में दे दिया (1 तीमुथियुस 2:6)। वह निर्धन हो गया ताकि हम धनवान बनें (2 कुरिन्थियों 8:9)। अब हम प्रभु द्वारा छुड़ाए गए हैं—पाप के बंधन से छुड़ाए गए हैं (रोमियों 6:14; तीतुस 2:14), हर श्राप से छुड़ाए गए हैं (गलातियों 3:13), शैतान से छुड़ाए गए हैं (कुलुस्सियों 1:13,14) और इस वर्तमान बुरे युग से छुड़ाए गए हैं (गलातियों 1:4)। जो हम थे वह बन गया ताकि वह हमें ऊंचा उठा सके जहां वह है और हमें परमेश्वर के बेटे और बेटियां, परमेश्वर के वारिस और संगी वारिस बना सके। और उसके कारण हम धर्मी ठहराए गए, परमेश्वर ने हम पर अपने बहुतायत के अनुग्रह को उण्डेल दिया और हम इस जीवन में राज्य करते हैं (रोमियों 5:15-19)। मेरा छुड़ानेवाला जीवित है! (अय्यूब 19:25,26)। यीशु का सामर्थी नाम छुड़ाता है, मुक्ति देता है, बंधनों को तोड़ता है, दबे हुओं को आजाद करता है, बंधुओं को स्वतंत्र करता है, और उसके कारण हम इस जीवन में राज्य करते हैं और प्रभुता पाते हैं!

शैतान का नाश करने वाला—"यीशु" का नाम उस व्यक्ति का नाम है जो स्त्री की संतान के रूप में आया, शैतान के सिर को कुचलने के लिए (उत्पत्ति 3:15)। वह है जो शैतान को पृथ्वी पर उसके राजपद से हटाता है (यूहन्ना 12:31)। यह यीशु वही है जिसके पास शैतान आया, लेकिन उसे उसमें कोई स्थान, कोई प्रवेश, कोई आधार, कोई शक्ति नहीं मिली, उसमें उसका कुछ नहीं (यूहन्ना 14:30)। इस यीशु ने क्रूस पर, शैतान का न्याय किया, उसे दोषी ठहराया, और उसे दण्ड दिया (यूहन्ना 16:11)। इस यीशु ने क्रूस पर शैतान को और सारी दुष्टात्माओं को निहत्था किया, उसके सारे हथियार छिन लिए और अपनी विजय के कारण उसका खुलमखुल्ला तमाशा बनाया (कुलुस्सियों 2:15)। वह बलवान है जिसने बलवान व्यक्ति के घर में प्रवेश किया, उसके हथियार छिन लिए और उसकी वस्तुओं को लूट लिया (लूका 11:21,22)। इस यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा शैतान का नाश कर दिया (इब्रानियों 2:14)। और यह सबकुछ उसने केवल हमारे लिए, हमारा प्रतिनिधित्व करते हुए और हमारी ओर से किया। आज, यीशु के सामर्थी नाम में शैतान और उसकी दुष्टात्माएं कांप उठती हैं और विश्वासी के सामने भाग जाती हैं, दुष्टात्माओं को निकाला जाता है, शैतान के कामों का नाश किया जाता है और लोग छुड़ाए जाते हैं।

विजयी विजेता। सदा का राजा—"यीशु" का नाम उसका नाम है जिसने अधोलोक और कब्र को जीत लिया और विजयी होकर मरे हुओं में से जी उठा, पहिलौठा, मरे हुओं में पहले जी उठने वाला (प्रकाशितवाक्य 1:5,18; कुलुस्सियों 1:18)। उसी के पास पृथ्वी का सारा अधिकार है (मत्ती 28:18)। वह सारी वस्तुओं का प्रधान है, सारी वस्तुएं उसके पांव के नीचे हैं। वह सारी प्रधानताओं और अधिकारों और ताकतों के बहुत ऊपर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है, और हर नाम के ऊपर है जो न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी लिया जाएगा (इफिसियों 1:20-22)। आज वह नई वाचा का मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:4,5; इब्रानियों 7:25; इब्रानियों 8:6;

इब्रानियों 9:16,17), हमारे अंगीकार का प्रेरित (इब्रानियों 3:1), हमारे लिए अगुवा (इब्रानियों 6:20), पवित्र स्थान का सेवक (इब्रानियों 8:2), हमारा महान महायाजक (इब्रानियों 3:1; इब्रानियों 4:14), मध्यस्थ (इब्रानियों 7:25) और हमारा सहायक है (1 यूहन्ना 2:1)। वह पहला और आखरी, अल्फा और ओमेगा है, जो सारी वस्तुओं को सम्भालता है, आरम्भ से लेकर अंत तक, और फिर भी उसका न कोई आरम्भ है और न अंत, वह आरम्भ से अंत तक सार्वभौम और सर्वश्रेष्ठ है (प्रकाशितवाक्य 1:8; प्रकाशितवाक्य 2:8; प्रकाशितवाक्य 21:6; प्रकाशितवाक्य 22:13)। वह आमेन (प्रकाशितवाक्य 3:14), वैसा ही है, परमेश्वर के सारे उद्देश्यों की परिपूर्णता है (इफिसियों 1:10; इफिसियों 3:10,11)। वह यिशै की ठूंठ है (यशायाह 11:1)। शाखा (यशायाह 11:1; जकर्याह 3:8; जकर्याह 6:12)। दाऊद का प्रतिज्ञात पुत्र (2 तीमुथियुस 2:8), दाऊद का मूल और संतान (प्रकाशितवाक्य 5:5; प्रकाशितवाक्य 22:16), यहूदा वंश का सिंह (प्रकाशितवाक्य 5:5) उसने सबकुछ जीत लिया। वह पृथ्वी के राजाओं का अधिकारी है (प्रकाशितवाक्य 1:5)। वह मसीह यीशु हमारा प्रभु है (1 तीमुथियुस 1:12), महिमा का प्रभु (1 कुरिन्थियों 2:8) और सबका प्रभु है (प्रेरितों के काम 10:36)। वह सबसे ऊंचा स्थान रखता है, सारी बातों में पहला स्थान और इसलिए वह सदा सबसे प्रधान ठहरेगा (कुलुस्सियों 1:18)। वह परम धन्य और अद्वैत अधिपति, राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है, और अमरता उसी की है, वह अगम्य ज्योति में रहता है सारा आदर और सनातन सामर्थ उसी की है, जो हमेशा के लिए राज्य करने फिर आ रहा है (1 तीमुथियुस 6:15,16; प्रकाशितवाक्य 19:15,16)। उसका नाम हमें वह सब कुछ प्रदान करता है जिसकी हमें आवश्यकता है। उसका नाम सभी लोक को आज्ञा देता है, और यीशु के नाम पर स्वर्ग, पृथ्वी और अधोलोक में हर घुटना झुकेगा, और हर जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है।

जब विश्वास में उसका नाम पुकारा जाता है तो वह सब कुछ

घटित होता है जो वह शारीरिक रूप से उपस्थित होने पर करता। वह अपने नाम के उल्लेख के जितना ही करीब है। वह जो कुछ भी है और जो कुछ उसने पूरा किया है, वह उसी नाम में, उसके राजसी नाम के माध्यम से निहित और व्यक्त किया गया है। वह, यीशु, उसके नाम में है।

वह कौन है
और वह सब जो उसने पूरा किया है,
उसी नाम में, उनके राजसी नाम के माध्यम से,
निहित और व्यक्त किया गया है।

चिंतन

1) यीशु के व्यक्तित्व पर चिंतन करें, वह कौन है, उसने क्या हासिल किया है और आने वाले समय में वह क्या हासिल करेगा। यीशु के कम से कम तीन पहलुओं के बारे में सोचें जिनका इस अध्याय में उल्लेख नहीं किया गया है कि आप उनके विवरण में जोड़ सकते हैं कि वह कौन है। शांति, पूर्ण कल्याण, पूर्ण पूर्णता। उनका नाम हमारे डर को शांत करता है, भ्रम को दूर करता है, पीड़ाओं को दूर भगाता है और पूर्णता का प्रबंधन करता है।

3
परमेश्वर के नाम के पुराने नियम के प्रकाशन

जब हम यह पता लगाने की तैयारी करते हैं कि यीशु ने अपने नाम का उपयोग करने का अधिकार देकर हम विश्वासियों को क्या उपलब्ध कराया है, तो दो महत्वपूर्ण पहलू हैं जिन्हें हमें जानने की आवश्यकता है।

पहले, हमें यह समझना चाहिए कि जब यीशु ने 12 प्रेरितों से, और बाद में 70 शिष्यों और अन्य लोगों से अपने नाम के उपयोग के बारे में बात की, तो ये यहूदी लोग थे। अपनी आत्मिक विरासत के हिस्से के रूप में उन्हें जीवन के हर दिन के मामलों में यहोवा परमेश्वर के नाम के उपयोग की गहरी समझ थी। नए नियम के विश्वासियों के रूप में, यह हमें पुराने नियम को देखने के द्वारा इस समझ को प्राप्त करने में भी मदद करेगा। हम इस अध्याय में पुराने नियम की समझ और यहोवा परमेश्वर के नाम के उपयोग का एक त्वरित सर्वेक्षण करेंगे।

दूसरा, प्रभु यीशु हमारे लिए प्रतिनिधित आत्मिक अधिकार में चलने का क्या अर्थ है, इसका आदर्श उदाहरण और मूर्त रूप है। प्रभु यीशु पिता के नाम से आया और पिता के नाम में उसने अपना काम किया। फिर उसने हमें उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए अपने नाम से भेजा, ठीक वैसे ही जैसे वह पिता का प्रतिनिधित्व करने वाले पिता के नाम से आया था। इसलिए अगले अध्याय में हम देखेंगे कि यीशु के पिता के नाम में आने का क्या अर्थ था। हमें भी वैसा ही करना चाहिए, जब हम यीशु के नाम से संसार में जाना चाहते हैं।

एक बार जब हम इन दो महत्वपूर्ण पहलुओं को जान लेते हैं तो हम अपने विशेषाधिकार और यीशु के नाम के उपयोग के अधिकार की खोज करेंगे और नया नियम जो कुछ भी प्रस्तुत करता है उसके विषय में विचार करेंगे।

हम पहले पुराने नियम में परमेश्वर के कुछ महत्वपूर्ण नामों और उपाधियों को प्रस्तुत करते हैं। उसके बाद हम सर्वेक्षण करते हैं कि कैसे इस्राएल के लोगों ने अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर के नाम को आदर दिया।

एलोहीम (परमेश्वर)

उत्पत्ति 1:1

आदि में परमेश्वर *(एलोहीम)* **ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।**

हिब्रू *'एलोहीम'* पुराने नियम में "परमेश्वर" के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है और यह सर्वशक्तिमान, सामर्थी, बलवान परमेश्वर को संदर्भित करता है। दिलचस्प बात यह है कि, *'एलोहीम'* एक हिब्रू बहुवचन है, और इसका इस्तेमाल "ईश्वरों" या "बलवानों" या "सामर्थी लोगों" (एक से अधिक) के अर्थ से भी किया जा सकता है। खास बात यह है कि जब परमेश्वर के लिए *'एलोहीम'* का प्रयोग किया जाता है, तो वह हमेशा एकवचन क्रियाओं के साथ प्रयोग किया जाता है। इसलिए, *'एलोहीम,'* हालांकि एक बहुवचन नाम है, जब परमेश्वर का जिक्र करता है, तो इसका इस्तेमाल एकवचन में किया जाता है, इस प्रकार बिना किसी विभाजन के एकता और सहमति का संकेत देता है—*"हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर (एलोहीम) है, यहोवा एक ही है"* (व्यवस्थाविवरण 6:4)। *'एलोहीम'* को अक्सर एकरूपी बहुवचन संज्ञा के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसे हम सामूहिक संज्ञा के रूप में समझते हैं। यह त्रिएक परमेश्वर, तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर की ओर इशारा करता है। *"और जो*

गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है" (1 यूहन्ना 5:7)। *'एलोहीम,'* बाइबल का परमेश्वर, वह ईश्वर जिसने सभी वस्तुओं को बनाया, तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर है।

एल (परमेश्वर)

इब्रानी शब्द *'एल'* जिसका अनुवाद "परमेश्वर" किया गया है, सामर्थी, सर्वशक्तिमान या शक्तिशाली का प्रतीक है। यह परमेश्वर को पराक्रमी होने के रूप में दिखाता है। इसका पहला उल्लेख उत्पत्ति 14:18 में है। एल परमेश्वर के कई गुणों के साथ जुड़ा हुआ है (जैसा कि नीचे कुछ पवित्र शास्त्र संदर्भों के साथ सूचीबद्ध किए गए हैं)। नीचे दिए गए पवित्र शास्त्र के संदर्भों को देखने, ध्यान करने और परमेश्वर के इन नामों और गुणों पर चिंतन करने के लिए आपको समय देना चाहिए।

परमेश्वर के इन गुणों का ध्यान करते हुए परमेश्वर के प्रति अपने हृदय में आराधना उत्पन्न होने दें।

- ***एल एल्योन :*** परम प्रधान परमेश्वर, सर्वोच्च परमेश्वर (उत्पत्ति 14:18-22)
- ***एल शद्दाए :*** सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सर्व पर्याप्त, परमेश्वर जो पर्याप्त से अधिक है, स्तनधारी (उत्पत्ति 17:1)
- ***एल ओलाम :*** सनातन परमेश्वर, अनंतकाल का परमेश्वर, सदाकाल का परमेश्वर (उत्पत्ति 21:33)
- ***एल कन्ना :*** जलन रखने वाला परमेश्वर (निर्गमन 20:5)
- ***एल राखूम :*** दयालु परमेश्वर, तरस रखने वाला परमेश्वर (व्यवस्थाविवरण 4:31)
- ***एल अमान*** : विश्वासयोग्य परमेश्वर (व्यवस्थाविवरण 7:9)
- ***एल गादोल*** : सामर्थी परमेश्वर, महान ईश्वर (व्यवस्थाविवरण 7:21;

व्यवस्थाविवरण 10:17)

- ***एल गिब्बोर*** : सामर्थी परमेश्वर, योद्धा परमेश्वर (व्यवस्थाविवरण 10:17)
- ***एल यारे*:** भयानक परमेश्वर, डरावना परमेश्वर (व्यवस्थाविवरण 10:17)
- सत्य का परमेश्वर *(एल)*, अन्याय न करने वाला, धर्मी और सिधाई रखने वाला परमेश्वर (व्यवस्थाविवरण 32:4)
- ***एल खाही* :** जीवित परमेश्वर (यहोशू 3:10)

परमेश्वर के नाम और उपाधियां
परमेश्वर के स्वरूप और गुणों को
प्रगट करती हैं

मैं जो हूं सो हूं

निर्गमन 3:13-15

13 मूसा ने परमेश्वर से कहा, जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे यह कहूं, कि तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझसे पूछें, कि उसका क्या नाम है? तब मैं उनको क्या बताऊं?
14 परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं जो हूं सो हूं। फिर उसने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका नाम मैं हूं है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।
15 फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि तू इस्राएलियों से यह कहना, कि तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, यहोवा, उसी ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है। देख, सदा तक मेरा नाम यही होगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।

जब मूसा ने परमेश्वर से उसका नाम पूछा, जैसा कि निर्गमन 3 में लिखा है, तो *'एलोहीम'* ने मूसा से कहा "**मैं हूं**" (हमेशा मौजूद है, हमेशा होगा) "**जो**" "**मैं हूं**" (हमेशा मौजूद, हमेशा होगा), या संक्षिप्त "**मैं हूं**"

परमेश्वर का उल्लेख है जो हमेशा मौजूद है, जो हमेशा है। बाइबल का परमेश्वर वह परमेश्वर है जिसे समय का बंधन नहीं है। वह अब सनातन में वास करता है। वह है। वह समय के बाहर के दायरे में रहता है। जैसा कि हम जानते हैं कि समय परमेश्वर के लिए कोई मायने नहीं रखता। वह सनातन, स्वयंभू ईश्वर है। यह महान **मैं हूं** *"अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर"* है। इन पितरो ने चलकर इस महान **मैं हूं** की सेवा की।

दिलचस्प बात यह है कि हम जानते हैं कि नए नियम में, प्रभु यीशु ने अपने लिए इसी उपाधि का प्रयोग किया था। *"यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि पहले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ, मैं है"* (यूहन्ना 8:58)।

यहोवा (प्रभु)

शायद इस्राएल के लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण नाम, और पूरे पुराने नियम में इस्तेमाल किया जाने वाला नाम है इब्रानी वाचा का नाम *"यहोवा"* (या *याहवे* या *याव्हे*)। यह नाम अंग्रेजी बाइबल के विभिन्न संस्करणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है: प्रभु, यहोवा, याहवे, **परमेश्वर** अंग्रेजी बाइबल केजेवी अंग्रेजी बाइबिल और एनकेजेवी अंग्रेजी बाइबिल ने 'यहोवा' को प्रभु किया है और इसलिए वह आसानी से पहचानने योग्य है।

निर्गमन 6:2-4
2 और परमेश्वर ने मूसा से कहा, कि मैं यहोवा हूं।
3 मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम से इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को दर्शन देता था, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रगट न हुआ।
4 और मैंने उनके साथ अपनी वाचा दृढ़ की है, अर्थात् कनान देश जिसमें वे परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दे दूं।

"यहोवा" नाम सनातन, स्वयंभू, अपरिवर्तनीय ईश्वर का उल्लेख

करता है जो वाचा का पालन करता है। जब परमेश्वर ने मूसा को उसके कार्य के लिए भेजा तब उसने उसके "यहोवा" नाम पर ज़ोर देते हुए यह प्रगट किया कि "यहोवा" वह परमेश्वर है जो वाचा का पालन करता है। यहोवा अपने खास लोगों के लिए परमेश्वर का वाचा का नाम है। इस नाम के द्वारा वह अपने लोगों के साथ वाचा में था और वह जो कुछ भी है, उसे उसने लोगों को उपलब्ध कराया। उसे उम्मीद थी कि उसके लोग उसके नाम का आदर करेंगे और केवल उसकी ही स्तुति करेंगे। *"मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूंगा"* (यशायाह 42:8)।

हम पुराने नियम के पवित्रशास्त्र में यहोवा की कई उपाधियां देखते हैं जो विभिन्न पहलुओं को प्रकट करती हैं कि यहोवा परमेश्वर कौन है, वह क्या होगा और वह अपने लोगों के लिए क्या करेगा।

- ***यहोवा-एलोहीम*** **:** सनातन सृजनहार (उत्पत्ति 2:4-25)।
- ***अदोनाय-यहोवा*:** प्रभु हमारा सम्प्रभुताकारी; स्वामी यहोवा (उत्पत्ति 15:2,8)
- ***यहोवा-यिरे*:** प्रभु देखेगा या प्रयोजन करेगा (उत्पत्ति 22:8-14)
- ***यहोवा-राफा*** **:** प्रभु हमारा चंगा करने वाला (निर्गमन 15:26)
- ***यहोवा-निस्सी*** **:** प्रभु हमारी पताका (निर्गमन 17:15)
- ***यहोवा-एलोहेका*** **:** प्रभु मेरा परमेश्वर (निर्गमन 20:2,5,7)
- ***यहोवा-मकादिशकेम*** **:** प्रभु हमारा पवित्र करने वाला (निर्गमन 31:13; लैव्यव्यवस्था 20:8; लैव्यव्यवस्था 21:8; लैव्यव्यवस्था 22:9,16,32; यहेजकेल 20:12)
- ***यहोवा-शालोम*** **:** प्रभु हमारी शांति (न्यायियों 6:24)
- ***यहोवा-सबाओथ*** **:** सेनाओं का प्रभु (1 शमूएल 1:3; आदि, 284 बार)

- ***यहोवा-एल्योन* :** परमप्रधान प्रभु (भजन संहिता 7:17; भजन संहिता 47:2; भजन संहिता 97:9)
- ***यहोवा-रोही* :** प्रभु मेरा चरवाहा (भजन संहिता 23:1)
- ***यहोवा-होसीनू* :** प्रभु हमारा कर्ता (भजन संहिता 95:6)
- ***यहोवा-एलोहीनू* :** प्रभु हमारा परमेश्वर (भजन संहिता 99:5,8,9)
- ***यहोवा-सिदकेनू* :** प्रभु हमारी धार्मिकता (यिर्मयाह 23:6; यिर्मयाह 33:16)
- ***यहोवा-शम्मा* :** प्रभु उपस्थित है (यहेजकेल 48:35)
- ***यहोवा-एलोहाय* :** प्रभु मेरा परमेश्वर (जकर्याह 14:5)

दैनिक जीवन में परमेश्वर का नाम

अब हम एक त्वरित सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हैं कि पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के नाम का क्या अर्थ है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह यह प्रकाशन या आत्मिक समझ धीरे-धीरे प्राप्त हुई। अर्थात, परमेश्वर के लोगों ने इन बातों को समय के साथ और पीढ़ी दर पीढ़ी समझा।

लोग प्रभु के नाम को पुकारकर परमेश्वर की आराधना करते थे। अब्राहाम इस बात का एक बड़ा उदाहरण है जहां पर उसकी यात्राओं के द्वारा, उसने विभिन्न स्थानों में वेदियां बनाई और परमेश्वर के नाम को पुकारा (उत्पत्ति 12:8; उत्पत्ति 13:4; उत्पत्ति 21:33; उत्पत्ति 22:14; उत्पत्ति 26:25)। ऐसा भी समय था जब परमेश्वर की विशेष मुलाकातें होती थी और परमेश्वर का नया नाम, जो परमेश्वर के स्वभाव के एक निश्चित पहलू को प्रगट करता था, प्रगट किया जाता था। **उदाहरण:** *यहोवा-यिरे* अर्थात "परमेश्वर प्रयोजन करेगा" (उत्पत्ति 22:14)।

परमेश्वर ने जो कुछ किया था उसके आधार पर लोग अक्सर परमेश्वर की प्रशंसा करते थे। लाल समुद्र विभाजित करने के द्वारा उन्होंने घोषणा की, *"यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है"* (निर्गमन 15:3)। अमालेकियों पर विजय पाने के बाद, *"तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवा-निस्सी रखा"* (निर्गमन 17:15)।

उन्हें प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ नहीं लेना था। दस आज्ञाओं में तीसरी आज्ञा थी : *"तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा"* (निर्गमन 20:7)। *"तुम मेरे नाम की झूठी शपथ खाकर अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराना; मैं यहोवा हूं"* (लैव्यव्यवस्था 19:12)।

घोषित किए गए नाम से महिमा प्रगट होती थी। पुराने नियम में हम यह एक महत्वपूर्ण प्रकाशन देखते हैं। जब मूसा ने परमेश्वर की महिमा देखने के लिए बिनती की, तब परमेश्वर ने यह कहकर उत्तर दिया, *"मैं तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा"* (निर्गमन 33:19)। प्रभु के नाम की घोषणा परमेश्वर की महिमा को ले आती है। यह जुलूस है जो राजा के आगमन की घोषणा करता है। *"उसने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे। उसने कहा, मैं तेरे सम्मुख हो कर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चांहू उसी पर दया करूंगा"* (निर्गमन 33:18,19, भी देखें निर्गमन 34:5-8)।

प्रभु के नाम की घोषणा
परमेश्वर की महिमा को ले आती है।

उसके नाम में शपथ लेना (मन्नत मानना)। दिलचस्प बात यह है कि लोगों को सिखाया गया था कि वे प्रभु के नाम में गम्भीर प्रतिज्ञाएं करें, शपथ लें और मन्नतें मानें। वस्तुतः यह गवाह के रूप में परमेश्वर को शपथ में लाना था और इसलिए एक बंधनकारक प्रतिज्ञा बन जाता था जिसका उन्हें पालन करना अवश्य था। *"अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना, और उसी के नाम की शपथ खाना"* (व्यवस्थाविवरण 6:13)। योनातान और दाऊद दोनों ने परमेश्वर के नाम में शपथ ली (1 शमूएल 20:42)। याद रखें कि प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि *"कभी शपथ न खाना", बल्कि "तुम्हारी बात 'हां' की 'हां' और 'नहीं' की 'नहीं' हो"* (मत्ती 5:34,37)।

याजक यहोवा के नाम से लोगों को आशीष देते थे। यहोवा ने याजकों को अपनी सेवा टहल करने और यहोवा के नाम से लोगों को आशीष देने के लिये नियुक्त किया। *"उस समय यहोवा ने लेवी गोत्र को इसलिये अलग किया कि वे यहोवा की वाचा का सन्दक उठाया करें, और यहोवा के सम्मुख खड़े होकर उसकी सेवाटहल किया करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें, जिस प्रकार कि आज के दिन तक होता आ रहा है"* (व्यवस्थाविवरण 10:8, व्यवस्थाविवरण 21:5 भी देखें)। वाचा का संदूक यरूशलेम नगर में लाने के बाद *"जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका, तब उसने सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया"* (2 शमूएल 6:18)।

याजक और लेवी प्रभु के नाम में सेवा टहल करते थे। *"क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे सब गोत्रियों में से उसी को चुन लिया है, कि वह और उसके वंश सदा उसके नाम से सेवा टहल करने को उपस्थित हुआ करें"* (व्यवस्थाविवरण 18:5)। इस प्रकार याजक लोगों के लिए परमेश्वर के प्रतिनिधि बन जाते थे और परमेश्वर के लोगों का भी प्रतिनिधित्व करते थे।

भविष्यद्वक्ता प्रभु के नाम में बोलते थे। संपूर्ण पुराने नियम में, भविष्यद्वक्ता ऐसे लोग थे जो प्रभु के नाम में बोलते थे (याकूब 5:10)। भविष्यद्वक्ता प्रभु के नाम में जो बोलते थे उस पर राजा और लोग विश्वास करते थे और उसके अनुसार कार्य करते थे। उदाहरण के तौर पर, 1 इतिहास 21:19 में लिखा है : *"गाद के इस वचन के अनुसार जो उसने यहोवा के नाम से कहा था, दाऊद चढ़ गया।"*

जहां परमेश्वर का नाम है वहां परमेश्वर वास करता है। दूसरी दिलचस्प सच्चाई जिसमें लोग चलते थे, वह स्थान था जहां परमेश्वर ने अपना नाम रखा था, वहां पर वह वास करता था और वहां पर वे उसकी आराधना कर सकते थे। *"किन्तु जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, कि वहां अपना नाम बनाए रखे, उसके उसी निवासस्थान के पास जाया करना"* (व्यवस्थाविवरण 12:5)। नए नियम में, विश्वासी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा निवासस्थान हैं। पुराने नियम के विपरीत नए नियम में, प्रभु के नाम में विश्वासियों का इकट्ठा होना उसकी उपस्थिति का स्थान बन जाता है।

प्रभु के नाम से कहलाए जाने वाले लोग। इस्राएली ऐसे लोग थे जो परमेश्वर *यहोवा* का नाम लेकर चलते थे। *"और पृथ्वी के देश देश के सब लोग यह देखकर, कि तू यहोवा का कहलाता है, तुझ से डर जाएंगे"* (व्यवस्थाविवरण 28:10)। क्योंकि वे उसका नाम लेकर चलते थे, और उसके अपने नाम के आदर के निमित्त, परमेश्वर अपने लोगों को त्यागता नहीं था। *"यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न तजेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी इच्छा से अपनी प्रजा बनाया है"* (1 शमूएल 12:22)। इस दृष्टि से वे क्षमा मांगते थे, संजीवित होने के लिए बिनती करते थे, और राष्ट्रीय तौर पर, प्रभु के नाम में ईश्वरीय हस्तक्षेप के लिए बिनती करते थे। *"हे यहोवा, अपने नाम के निमित्त मेरे अधर्म को जो बहुत हैं क्षमा करें"* (भजन संहिता 25:11)। वे प्रार्थना करते थे कि प्रभु के नाम में संजीवित किए जाएं। *"हे यहोवा,*

मुझे अपने नाम के निमित्त जिला! तू जो धर्मी है, मुझ को संकट से छुड़ा ले!" (भजन संहिता 143:11) । *"हे प्रभु, सुन ले; हे प्रभु, पाप क्षमा कर; हे प्रभु, ध्यान देकर जो करना है उसे कर, विलम्ब न कर; हे मेरे परमेश्वर, तेरा नगर और तेरी प्रजा तेरी ही कहलाती है; इसलिये अपने नाम के निमित्त ऐसा ही कर"* (दानिय्येल 9:19)।

वे प्रभु के नाम में दुश्मनों का सामना करते थे। वे यहोवा के नाम में युद्ध पर निकलते थे। *"दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु में सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है"* (1 शमूएल 17:45)। *"तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊंचे स्वर से हर्षित होकर गाएंगे, और अपने परमेश्वर के नाम से झण्डे खड़े करेंगे। यहोवा तुझे मुंह मांगा वरदान दे!"* (भजन संहिता 20:5)। *"किसी को रथों का, और किसी को घोड़ों का भरोसा है, परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे"* (भजन संहिता 20:7)।

वे गीत गाकर प्रभु के नाम की स्तुति करते थे। उसके नाम की स्तुति करना, उसकी स्तुति करना था। *"इस कारण मैं जाति जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरा नाम का भजन गाऊंगा"* (भजन संहिता 18:49)। उसका नाम उत्तम, अद्‌त और प्रतापमय नाम था और प्रशंसा के योग्य नाम था। *"हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना विभव स्वर्ग पर दिखाया है"* (भजन संहिता 8:1)। वे उसके नाम को महिमा देते थे (भजन संहिता 29:2; भजन संहिता 115:1); उसके नाम का धन्यवाद करते थे (भजन संहिता 30:4); उसके नाम की बड़ाई करते थे (भजन संहिता 34:3); उसके नाम की स्तुति करते थे (भजन संहिता 54:6); उसके नाम को धन्य कहते थे (भजन संहिता 96:2); और उसके नाम का भय रखते थे (भजन संहिता 86:11)। *"उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, यहोवा*

का नाम स्तुति के योग्य है" (भजन संहिता 113:3)। परमेश्वर ने अपने नाम को और अपने वचन को सबसे ऊंचा स्थान दिया था—*"मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा, और तेरी करूणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम को धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने बड़े नाम से अधिक महत्व दिया है"* (भजन संहिता 138:2)।

उन्हें प्रभु के नाम में सहायता, सुरक्षा मिली थी। *"... याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊंचे स्थान पर नियुक्त करे!"* (भजन संहिता 20:1)। *"यहोवा का नाम दृढ़ कोट है; धर्मी उसमें भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है"* (नीतिवचन 18:10)। *"यहोवा जे आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है, हमारी सहायता उसी के नाम से होती है"* (भजन संहिता 124:8)।

जो लोग प्रभु के नाम से आते थे उन्हें वे ग्रहण करते थे। *"धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है! हमने तुमको यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है"* (भजन संहिता 118:26)। यह प्रभु यीशु के नाम में भविष्यद्वाणी के रूप में बोलना भी था।

प्रभु के नाम में भरोसा रखना खुद प्रभु पर भरोसा रखना है। *"तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अन्धियारे में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और अपने परमेश्वर पर आशा लगाए रहे"* (यशायाह 50:10)। *"क्योंकि मैं तेरे बीच में दीन और कंगाल लोगों का एक दल बचा रखूंगा, और वे यहोवा के नाम की शरण लेंगे"* (सपन्याह 3:12)।

राष्ट्र प्रभु के नाम की ओर फिरेंगे। भविष्यद्वक्ता एक समय के विषय में बोल रहे थे जब अन्यजाति प्रभु के नाम को पुकारेंगे और केवल एक प्रभु होगा जिसकी आराधना की जाएगी। *"उस समय यरूशलेम यहोवा का सिंहासन कहलाएगा, और सब जातियां उसी*

यरूशलेम में मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी हुआ करेंगी, और, वे फिर अपने बुरे मन के हठ पर न चलेंगी" (यिर्मयाह 3:17)। *"उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएंगे"* (योएल 2:32)। *"तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस समय एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा"* (जकर्याह 14:9)। *"क्योंकि उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक अन्यजातियों में मेरा नाम महान है, और हर कहीं मेरे नाम पर धूप और शुद्ध भेंट चढ़ाई जाती है; क्योंकि अन्यजातियों में मेरा नाम महान है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है"* (मलाकी 1:11)।

जब हम परमेश्वर के नाम पर चिंतन करते हैं तब वह ध्यान देता है। *"तब यहोवा का भय माननेवालों ने आपस में बातें कीं, और यहोवा ध्यान धरकर उनकी सुनता था; और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी"* (मलाकी 3:16)।

यीशु : एक नाम में परमेश्वर का सर्वस्व

पुराने नियम के इस त्वरित सर्वेक्षण से, यह स्पष्ट हो जाता है कि यहोवा के नाम का उपयोग करना यहूदी लोगों के दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग था। यहोवा के नाम के उल्लेख के द्वारा वह अपने लोगों के निकट था। वे प्रभु के नाम का महत्व समझते थे।

अब कल्पना कीजिए कि प्रभु यीशु ऐसी स्थिति में कदम रखता है। देहधारी वचन, परमेश्वर का पुत्र, नासरत से एक साधारण और विनम्र बढ़ई के रूप में आता है। वह अपनी सेवकाई शुरू करता है, बारह पुरुषों को इकट्ठा करता है, जो सभी यहूदी हैं और उन्हें उसके नाम में जाने के लिए 12 भेजता है! जरा कल्पना कीजिए कि यीशु अपने 12

प्रेरितों से कह रहा है *"जाओ, मेरे यीशु मसीह नाम का उपयोग करो!"*

उसके चेले, पहले बारह, फिर 70 क्यों 12 जाकर बीमारों को चंगा करते, दुष्टात्माओं को बाहर निकालते और यीशु के नाम में अधिकार का उपयोग करने की कोशिश करते? "यहोवा" नाम के बारे में क्या, और परमेश्वर के सभी वाचा के नामों के बारे में जो वे अपने यहूदी विश्वास के हिस्से के रूप में इतनी अच्छी तरह से जानते थे?

यहां पर दो महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियां हैं जिनकी ओर हम संकेत कर सकते हैं :

सबसे पहले, 12 चेलों के पास प्रकाशन था, वे यीशु को मसीह के रूप में, परमेश्वर के रूप में पहचानते थे और उस पर विश्वास करते थे। इसी कारण उसने उसका अनुसरण किया था। यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने यीशु को मसीह के रूप में घोषित करते हुए उसकी ओर संकेत किया था, उसके रूप में जो उससे पहले था, वह जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देता है, परमेश्वर का मेम्ना, परमेश्वर का पुत्र (यूहन्ना 1:29-34)। अंद्रियास ने यीशु का अनुसरण किया क्योंकि उसने यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले को सुना था। अंद्रियास अपने भाई शमौन पतरस को ले आया, *"हमको ख्रिस्तस अर्थात् मसीह मिल गया"* (यूहन्ना 1:41)। फिलिप्पुस नतनएल से मिला जिसने यीशु से मुलाकात होने के बाद कहा, *"हे रब्बी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं; आप इस्राएल के महाराजा हैं"* (यूहन्ना 1:49)। हम मत्ती 16:16 में शमौन पतरस की घोषणा भी जानते हैं, *"आप जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं।"* इस प्रकार यह पूरी रीति से स्पष्ट है कि ये यहूदी लोग जिन्हें यीशु ने अपने प्रेरितों के रूप में नियुक्त किया था उसमें मसीह, परमेश्वर के पुत्र के रूप में विश्वास करते थे।

दूसरी बात, 12 ने यीशु को अपनी आंखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से अद्‌त कामों को करते देखा था। उन्होंने चंगाइयां, छुटकारा, आश्चर्यकर्म

देखे थे। इसलिए जब यीशु ने उन्हें अधिकार दिया और उन्हें अपने नाम का "नासरत के यीशु मसीह" उपयोग करने के लिए बाहर भेजा, तब उन्होंने ऐसा स्वेच्छा से किया। अर्थात उन्होंने परिणामों को देखा। इससे उन्हें विश्वास प्राप्त हुआ वह करते रहने का जो करने की उन्हें आज्ञा दी गई थी। अन्य लोग जिन्होंने वह सब देखा जो यीशु के द्वारा और 12 के द्वारा हो रहा था, उन्होंने यीशु के नाम का उपयोग करने के लिए कदम बढ़ाया और यीशु ने उन्हें नहीं रोका (मरकुस 9:30-38; लूका 9:49,50)। यीशु ने दूसरे 70 अनुयायियों को नियुक्त किया कि वे जाकर उसके नाम में प्रचार करें और सामर्थ के काम करें और उन्होंने ऐसा किया (लूका 10:1,9,17)।

इन यहूदी विश्वासियों ने यीशु के नाम की सामर्थ का प्रत्यक्ष अनुभव किया था। *यहोवा* की उपाधियों के माध्यम से परमेश्वर ने अपने बारे में जो कुछ भी प्रगट किया वह अब इस एक नाम में सिमटा हुआ है—यीशु का नाम।

आज हमारे लिए दो महत्वपूर्ण सबक हैं। सबसे पहले, हमें यह पहचानना होगा कि यीशु कौन है। हमारे पास व्यक्ति यीशु की महानता का एक व्यक्तिगत प्रकाशन होना चाहिए। दूसरा, हमें यह जानना चाहिए कि यीशु ने हमें अपने नाम का उपयोग करने के लिए अधिकार दिया है और हमें यीशु के नाम का उपयोग करने के लिए हियाव के साथ कदम बढ़ाना चाहिए।

वह सब जो परमेश्वर है,
इस एक नाम में समाहित है,
यीशु का नाम!

चिंतन

1) पुनरावलोकन करें कि कैसे पुराने नियम के समय में लोगों ने अपने दैनिक जीवन में यहोवा के नाम का उपयोग किया। इनमें से कम से कम पांच को चुनें जो नए नियम के विश्वासियों के समानांतर हों। चर्चा करें कि हम यीशु के नाम का समान तरीके से उपयोग कैसे करते हैं (हो सकता है कि यह बिल्कुल एक जैसा न हो)।

2) यदि आप 12 प्रेरितों में से एक या 70 शिष्यों में से एक होते, जो यहूदी के रूप में, यहोवा परमेश्वर के नाम की एक मजबूत समझ के साथ थे, पलेबढ़े थे, तो ...

(अ) जब नासरत के एक युवा बढ़ई ने कहा कि आप उसके नाम का उपयोग करके सामर्थी काम कर सकते हैं, तो आपने क्या जवाब दिया होता?

(आ) आप किस प्रकार के प्रश्नों से जूझते रहे होते?

(इ) वे कौन से प्रमुख कारक होंगे जो आपको उसके नाम का उपयोग करने के लिए विश्वास दिलाते?

4
मेरे पिता के नाम में

यूहन्ना 5:43
मैं अपने पिता के नाम से आया हूं, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई और अपने ही नाम से आए, तो तुम उसे ग्रहण कर लोगे।

यूहन्ना 10:25
यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, मैंने तुमसे कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं।

जैसा कि हमने पहले बताया है, हमारे लिए प्रतिनिधित अधिकार में चलने का क्या मतलब है इसका प्रभु यीशु सिद्ध उदाहरण और मूर्त रूप है। प्रभु यीशु पिता के नाम में आया और उसने पिता के नाम में अपने काम किए।

जब यीशु ने कहा, *"मैं पिता के नाम में आया हूं"*, इसका मतलब यह है कि उसे पिता द्वारा दिए गए प्रतिनिधित अधिकार के साथ वह आया है ताकि पिता का पूर्ण प्रतिनिधित्व करे। इसका मतलब यह है कि पिता के शब्दों को बोलने का और पिता के कामों को करने का, पिता की इच्छा को पूरा करने का और पिता द्वारा उसे दिया गया कार्य पूरा करने का आदेश उसके पास था।

जब यीशु ने कहा, "मैं पिता के नाम में आया हूं",
इसका मतलब यह है कि
उसे पिता द्वारा दिए गए प्रतिनिधित अधिकार के साथ
वह आया है
ताकि पिता का पूर्ण प्रतिनिधित्व करे।

पिता के नाम पर कार्य करने का अर्थ था कि यीशु ठीक वही करेगा जो पिता करेगा, पूरी तरह से पिता का प्रतिनिधित्व करते हुए, उसकी ओर से और उसके स्थान पर पिता द्वारा निहित अधिकार के कारण कार्य करेगा।

इस अध्याय, में हम विचार करते हैं कि यीशु पिता के साथ कैसे चला, ताकि वह पिता के नाम से कार्य कर सके, पिता की ओर से बोलते हुए, वह कर सके जो पिता करेगा। यीशु पिता के साथ कैसे चला इसका विचारपूर्वक अध्ययन करना हमारे लिए अच्छा होगा, ताकि उसका पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करने के लिए पिता के नाम में आने का अपना आदेश पूरा कर सके। प्रभु यीशु ने हमें अपने नाम में भेजा है ताकि हम उसका प्रतिनिधित्व करें, जैसे वह पिता का प्रतिनिधित्व करते हुए पिता के नाम में आया। हमें यीशु द्वारा उसके नाम में भेजा गया है, इसलिए हमें उस उदाहरण का अनुसरण करना है जो पिता ने हमारे लिए रखा है।

जीवन जो हम पिता के नाम में जीते हैं

“मेरे पिता के नाम में” एक “भेजने वाली एजेन्सी” का मात्र दावा नहीं था। पृथ्वी पर यीशु के जीवन का सबकुछ इस तथ्य से सम्बंधित था कि वह यहां पर पिता के नाम में था।

यीशु ने अपना जीवन इसी तरह बिताया ऐसे व्यक्ति के रूप में जो “पिता के नाम में आया” :

यीशु पिता के हृदय में रहता था, पिता के साथ निकट संगति में चलता था और उसने पिता को प्रगट किया (यूहन्ना 1:18)। *“जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ”* (यूहन्ना 10:15)।

यीशु पिता के साथ पूर्ण एकता में चला ताकि वह कह सके : *“मैं और पिता एक हैं”* (यूहन्ना 10:30)। *“यदि तुमने मुझे जाना होता, तो*

मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है...” (यूहन्ना 14:7)। *“यीशु ने उससे कहा, ... जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है ...”* (यूहन्ना 14:9)।

वह पिता के प्रेम को जानता था और उसके लिए पिता के प्रेम में निर्भर था । *“पिता पुत्र से प्रेम रखता है”* (यूहन्ना 3:35)। *“क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है वह सब उसे दिखाता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा”* (यूहन्ना 5:20)। यूहन्ना 10:17 भी देखें।

वह पिता के साथ अपने रिश्ते का अंगीकार करने से नहीं डरता था, भले ही इसका अर्थ यह था कि उस कारण उसे मौत की सज़ा क्यों न दी जाए (यूहन्ना 5:18)।

उसने पहचाना कि यदि लोग उसका अनादर करते हैं या उसका इन्कार करते हैं तो वे पिता का इन्कार करते हैं और उस पिता का अनादर करते हैं जिसने उसे भेजा (यूहन्ना 5:23)। *“जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है”* (यूहन्ना 15:23)।

पिता की इच्छा और कामों को पूरा करने के द्वारा उसने उत्साह पाया, बल पाया, और सम्भाला गया। *“मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं”* (यूहन्ना 4:34)। *“मैं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता ... क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं”* (यूहन्ना 5:30)। *“जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं ...”* (यूहन्ना 6:57)। *“जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है”* (यूहन्ना 17:4)।

उसने पिता के कामों को किया। वह पिता के कामों को देखने और करने के प्रति समर्पित था (यूहन्ना 5:17,19)।

यीशु समझ गया कि पिता के जिन कामों को उसने किया, वे उस सच्चाई के गवाह, प्रमाण, और साक्ष्य थे कि उसे पिता द्वारा भेजा गया था (यूहन्ना 5:36)। उसके जीवन पर पिता की मान्यता की मुहर के विषय में उसे भरोसा था (यूहन्ना 6:27)।

जिन कामों को उसने किया वे पिता के साथ उसकी एकता की अभिव्यक्ति थे। *"चाहे मेरा विश्वास न भी करो, परन्तु उन कामों का तो विश्वास करो, ताकि तुम जानो और समझो कि पिता मुझ में है और मैं पिता में हूँ"* (यूहन्ना 10:38)। *"... परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है"* (यूहन्ना 14:10)। *"मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो"* (यूहन्ना 14:11)।

उसने वही कहा जो पिता ने उसे सिखाया । *"... परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूं"* (यूहन्ना 8:28)। *"मैं वही कहता हूं जो मैंने अपने पिता के यहां देखा है"* (यूहन्ना 8:38)। *"क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूं? और क्या क्या बोलूं? और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं"* (यूहन्ना 12:49,50)। *"ये बातें जो मैं तुमसे कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता"* (यूहन्ना 14:10)। *"... जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं, वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा"* (यूहन्ना 14:24)।

उसे पूर्ण भरोसा था कि जब उसने प्रार्थना की तब पिता ने उसकी सुन ली। लाजर की कब्र के सामने खड़े रहकर यीशु ने कहा : *"हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है"* (यूहन्ना 11:41)।

वह जानता था कि वह वही है *"... जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है ..."* (यूहन्ना 10:36)।

यीशु इस आश्वासन के साथ चला कि *"जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा"* (यूहन्ना 6:37)। जिन लोगों को उसके पास आने के लिए ठहराया गया था वे उसके पास आएंगे। वह यह भी जानता था कि वे पिता के हाथ में सुरक्षित हैं। *"मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता"* (यूहन्ना 10:29)।

यीशु को आश्वासन और भरोसा था कि पिता हर समय उसके साथ रहता था । *"क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूं, और पिता है जिसने मुझे भेजा"* (यूहन्ना 8:16)। *"और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा ..."* (यूहन्ना 8:29)। *"... तुम सब तितरबितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे; तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है"* (यूहन्ना 16:32)।

यीशु ऐसा जीवन जिया जो हमेशा परमेश्वर को प्रसन्न करता था *"... मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिससे वह प्रसन्न होता है"* (यूहन्ना 8:29)। वह पिता की अधीनता में चला। *"... पिता मुझ से बड़ा है"* (यूहन्ना 14:28)। *"... मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं। उठो, यहां से चलें"* (यूहन्ना 14:31)। *"... मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं"* (यूहन्ना 15:10)।

यीशु ने अपने पिता की महिमा करने के लिए जीवन बिताया। उसने प्रार्थना की, *"हे पिता, अपने नाम की महिमा कर"* (यूहन्ना 12:28)। *"मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है"* (यूहन्ना 17:4)।

तेरे नाम को प्रगट किया और घोषित किया

यूहन्ना 17 में पिता से सम्बोधित अपनी प्रार्थना में, यीशु ने पिता के नाम

के उपयोग का उल्लेख किया। हम इन वाक्यों से कुछ अंतर्दृष्टियां प्राप्त करते हैं।

यूहन्ना 17:6,26
6 मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया; वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है।
26 और मैंने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उनमें रहे और मैं उनमें रहूं।

यूहन्ना 17:6,26 (जैसा कि अंग्रेजी बाइबल संस्करण-द पैशन ट्रांस्लेशन में अनुवादित है)
6 पिता, मैंने प्रगट किया है कि आप वास्तव में कौन हैं और मैंने आपको उस स्त्री पुरुषों पर प्रगट किया है जिन्हें आपने मुझे दिया। वे आपके थे, और आप ने मुझे दिया, और उन्होंने आपके वचन को अपने हृदयों में दृढ़तापूर्वक रखा है।
26 मैंने उन पर प्रगट किया है कि आप कौन हैं और मैं आपको उनके सामने और सच्चा प्रगट करूंगा, ताकि वे उसी अंतहीन प्रेम को अनुभव कर सकें जो आप मेरे लिए रखे हैं, क्योंकि आपका प्रेम अब उनमें वास करता है, और जैसे मैं उनमें रहता हूं!

न्यू किंग जेम्स संस्करण यीशु के इस बयान का सच्चा अनुवाद देता है, *"मैंने आपके नाम को प्रगट किया"*, (द पैशन ट्रांस्लेशन-अनुवाद के अनुसार) इस वाक्य का मतलब समझाता है: *"मैंने प्रकट किया है कि वास्तव में तुम कौन हो और मैंने इसे तुम पर प्रकट किया है।"* यह इस बात को स्पष्ट करता है कि यीशु के पिता के नाम में आने, बोलने और काम करने का उद्देश्य पिता सचमुच कौन है यह दिखाना और प्रगट करना है। उसी तरह यीशु के नाम में जाने का हमारा उद्देश्य लोगों के सामने यह प्रगट करना और दिखाना है कि यीशु सचमुच कौन है।

यीशु के पिता के नाम में आने,
बोलने और काम करने का उद्देश्य
पिता सचमुच कौन है यह दिखाना और प्रगट करना है।
उसी तरह यीशु के नाम में जाने का हमारा उद्देश्य
लोगों के सामने यह प्रगट करना और दिखाना है कि
यीशु सचमुच कौन है।

उस नाम से उनकी रक्षा कर

यूहन्ना 17:11,12
11 मैं इसके आगे जगत में न रहूंगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूं; हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा कर, कि वे हमारे समान एक हों।
12 जब मैं उनके साथ था, तब मैंने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा की; मैंने उनकी चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।

यीशु वचन 11 और 12 दोनों में समान शब्द "रक्षा" (ग्रीक *'टेरियो'*) का इस्तेमाल करता है जिसका मतलब है "पहरा देना, रक्षा करना, पर नज़र रखना।" यीशु शारीरिक तौर पर, पिता के नाम में अपने चेलों के साथ था, अर्थात पिता के अधिकार के द्वारा, परन्तु उसने उन लोगों को अपनी आत्मिक सुरक्षा प्रदान की जो उसे दिए गए थे। अब जैसा कि वह जानता था कि उसका जाना निकट था, वह उसी आत्मिक सुरक्षा को मांगता है, जो पिता के नाम के द्वारा उपलब्ध है कि वह अपने चेलों की रक्षा और रखवाली करना जारी रखे। यह हमें सिखाता है कि यीशु के नाम में हम उन लोगों के लिए अपनी आत्मिक सुरक्षा दे सकते हैं जिनकी हम परवाह करते हैं और उन लोगों पर जो हमें सौंपे गए हैं।

पिता के साथ पूर्ण एकात्मता में जीवन जीना

यूहन्ना 20:21

यीशु ने फिर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।

यह देखने पर कि यीशु ने पिता के नाम पर कैसे कार्य किया, हमें इस बात की बहुत जानकारी मिलती है कि चेलों के रूप में यीशु के नाम का उपयोग करने का हमारे लिए क्या अर्थ है। हमारे लिए "यीशु के नाम में" कहना हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले वाक्यांश से कहीं अधिक है। "मेरे पिता के नाम में" का यीशु के लिए जो अर्थ है, वही अर्थ हमारे लिए "यीशु के नाम में" कहने का होना चाहिए। इस में सब कुछ आ गया। सारा सांसारिक जीवन इस तथ्य से प्रवाहित हुआ कि वह यहां पिता के नाम पर था। यह एक ऐसा जीवन था जो पिता के साथ पूर्ण एकता में जिया जाता था।

हम पिता के साथ उसके निजी जीवन से *"मैं मेरे पिता के नाम से आया हूं"* इस यीशु के वाक्य को अलग नहीं कर सकते। यह सच्चाई कि वह पिता के नाम में आया यह भी अर्थ रखती है कि वह पिता के साथ एक निश्चित तरीके से चला—पिता के साथ पूर्ण एकता की चाल। उसी तरह, हमें स्वयं प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारे व्यक्तिगत चालचलन से यीशु के नाम के हमारे उपयोग को अलग नहीं करना चाहिए। हम यीशु में हैं और वह हम में है। यीशु के साथ यह एकता और प्रतिदिन हम उसे कैसे जीते हैं यीशु के नाम के हमारे उपयोग के लिए महत्वपूर्ण है।

जिस तरह से यीशु ने पिता के साथ पृथ्वी पर अपना जीवन बिताया, वह इस बात का एक आदर्श है कि हमें यीशु के साथ एकता में अपना जीवन कैसे जीना चाहिए। *"जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं, वैसे ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा"* (यूहन्ना 6:57)। *"उस दिन तुम जानोगे कि मैं*

अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुममें" (यूहन्ना 14:20)। *"जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था"* (1 यूहन्ना 2:6)।

एक विश्वासी के द्वारा यीशु के नाम का उपयोग, जबकि यह प्रभु यीशु द्वारा हमें सौंपे गए अधिकार की अभिव्यक्ति है, परन्तु यह इससे कई आगे बढ़ जाता है। इसका सम्बंध इस बात से है कि हम कौन हैं, हम अपना जीवन कैसे जीते हैं, हम क्या कहते हैं और क्या करते हैं। यह एक ऐसा जीवन है जो यीशु के साथ पूर्ण एकता में जिया जाता है। इसका सम्बंध हर तरह से, हर चीज़ में, हर समय पूरी तरह से यीशु का प्रतिनिधित्व करने से है।

यीशु पिता के नाम में आया।
उसने हमें उसके नाम में भेजा है।
जैसे यीशु पिता के साथ एकता में चला
हमें भी यीशु के साथ एकता में चलने की आवश्यकता है
ताकि उसके नाम के उपयोग के माध्यम से
हम यीशु का पूर्ण प्रतिनिधित्व करेंगे।

चिंतन

1) यीशु ने जब कहा *"मैं मेरे पिता के नाम में आया हूं"* तो इसका यीशु के लिए क्या मतलब था इसका पुनरीक्षण करें। इन संदर्भों में उसका क्या अर्थ था ...

- उसके अधिकार का स्रोत—पिता ने मुझे अधिकार दिया है,

- उसके कार्य का उद्देश्य—पिता के नाम को प्रगट करना और महिमा देना,
- उसके प्रतिदिन के जीवन का संरेखन—पिता के साथ पूर्ण एकता में रहना, और
- सेवकाई के प्रति रवैया—वही बोलना जो पिता बोलता है, वही करना जो पिता करता है।

जब हम "यीशु के नाम में" जाते हैं, तब हम इसका अनुकरण कैसे करते हैं?

5
यीशु के नाम का सही उपयोग

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, प्रभु यीशु ने अपने बारह प्रेरितों को 12 भेजा और बाद में दूसरे 70 चेलों को भेजा कि वे उसका प्रतिनिधित्व करें और जाकर वह प्रचार करें जो वह प्रचार करता और वह करें जो वह करता—चंगाइयां, छुटकारा और आश्चर्यकर्म—उसके नाम का इस्तेमाल करते हुए। इस तरह ये लोग "नासरत के यीशु के नाम में" सामर्थी कामों को करते फिरे।

प्रारंभिक चेले

हमारे पास सुसमाचारों में लिखा है कि यीशु ने 12 प्रेरितों को आज्ञा दी कि वे जाकर उस काम को करें जो वह कर रहा था।

मत्ती 10:1,7,8 (मरकुस 6:7,12,13 भी देखें)

1 फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।
7 और चलते चलते प्रचार कर कहो, 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'
8 बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुमने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।

लूका 9:1,2,6,10अ

1 फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं को और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया,
2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा।
6 तब वे निकलकर गांव गांव सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे।

10अ फिर प्रेरितों ने लौटकर जो कुछ उन्होंने किया था, उसके विषय में बता दिया ।

हमारे पास यीशु ने अपने 12 चेलों को उसके नाम का कैसे उपयोग करें इस बारे स्पष्ट रूप से जो सिखाया वह लिखा नहीं है, लेकिन हम जानते हैं कि वे उसके नाम का उपयोग करते हुए बाहर गए। लूका अध्याय 9 में, चेलों को बाहर भेजा गया उसके जल्द ही बाद, निम्नलिखित बातें लिखी हुई हैं।

लूका 9:49,50
49 तब यूहन्ना ने कहा, हे स्वामी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ होकर आपके पीछे नहीं हो लेता।
50 यीशु ने उससे कहा, उसे मना मत करो, क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।

सो स्पष्ट रूप से किसी अन्य व्यक्ति ने जो 12 का हिस्सा नहीं था, जो हो रहा था उसे "जान लिया।" उस व्यक्ति ने भी यीशु को देखा और सुना होगा, यीशु में परमेश्वर के पुत्र के रूप में विश्वास किया, और फिर दुष्टात्माओं को 12 निकालने और आश्चर्यकर्म करने के लिए यीशु के नाम का उपयोग करने के लिए आगे बढ़ा (मरकुस 9:38,39 भी देखें)। इसलिए हम जानते हैं कि प्रेरित अपने कार्यों को करने के लिए नासरत के यीशु मसीह के नाम का साहसपूर्वक उपयोग कर रहे थे, और ऐसा ही कोई और भी कर रहा था।

यीशु ने और 70 अनुयायियों को नियुक्त किया और उसने उन्हें वही आदेश दिया जो उसने 12 को दिया था।

लूका 10:1,9,17-19
1 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।

[9] वहां के बीमारों को चंगा करो; और उनसे कहो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।
[17] वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, आपके नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।
[18] उसने उनसे कहा, मैंने शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरता हुआ देखा।
[19] देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ये प्रेरित और चेले यीशु के नाम में चंगाई और छुटकारे के सामर्थी कार्य कर रहे थे और प्रचार कर रहे थे। वे उन परिणामों से उत्साहित थे जिन्हें उन्होंने यीशु के नाम का उपयोग करते हुए देखा था। *"हे प्रभु, आपके नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं* (व.17)।" यीशु तब उन्हें उनके नाम के उपयोग के माध्यम से उनके अधिकार के दायरे के बारे में बताता है। वे जिस अधिकार में चलेंगे वह *"शत्रु की सारी सामर्थ पर"* था। और उन्हें इस बात से डरने की ज़रूरत नहीं है कि दुश्मन उनके खिलाफ सफलता के साथ बदला ले सकता है, क्योंकि यीशु ने कहा, *"किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।"*

यीशु का नाम सारी दुष्टात्माओं पर
और शैतान की सामर्थ पर
हमें अधिकार देता है।

यीशु अपने नाम का उपयोग करने का अधिकार सारे विश्वासियों को देता है

यूहन्ना के सुसमाचार में हमारे पास यह लिखा हुआ है कि यीशु ने अपने चेलों को अपने कार्यों को करने के संदर्भ में और प्रार्थना में भी उसके नाम का उपयोग करने के बारे में सिखाया। हम यहां इन वचनों का उल्लेख करते हैं, और बाद में विस्तार से उन पर फिर से विचार करेंगे।

यूहन्ना 14:12-14
12 मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।
14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

यूहन्ना 16:23,24
23 उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे; मैं तुमसे सच सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।
24 अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

कृपा करके निम्नलिखित वचनों पर विचार करें।

यूहन्ना 14:12-14 में, संदर्भ है यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, जिसके बाद उसने सारे विश्वासियों को सामर्थ प्रदान करने हेतु अपना पवित्र आत्मा भेज दिया, सभी विश्वासी उन कामों को करते हैं जो यीशु कर रहा था और उनसे भी बड़े काम। यूहन्ना 16:23,24 का संदर्भ भी *"उस दिन तुम"* पुनरुत्थान के दिन का उल्लेख करता है जिस समय में आज हम हैं।

इसलिए जिन कामों को यीशु ने किया उन कामों को और उससे भी बड़े कामों को करने हेतु यीशु के नाम का इस्तेमाल करने का अधिकार प्रत्येक विश्वासी को दिया गया है। हमारी बिनतियों को सीधे परमेश्वर के पास लाने के लिए और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर पाने के लिए यीशु के नाम का उपयोग करने का अधिकार प्रत्येक विश्वासी को दिया गया है।

प्रभु यीशु ने अपने चेलों को अपने नाम का इस्तेमाल करने के अन्य कई पहलू सिखाए। हम आने वाले अध्यायों में उन पर विचार करेंगे।

उसके पुनरुत्थान के बाद, महान आदेश में फिर हम एक बार देखते हैं कि यीशु के नाम का इस्तेमाल करने का अधिकार सारे विश्वासियों को दिया जा रहा है।

मरकुस 16:17,18
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे,
18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

इस आदेश में यह तथ्य छिपा हुआ है कि विश्वास करने वाले, सभी विश्वासी, उन सभी कामों को करने हेतु यीशु के नाम का उपयोग कर सकते हैं जिनका यीशु ने उल्लेख किया। सभी विश्वासी दुष्टात्माओं का सामना कर सकते हैं, उन पर अधिकार चला सकते हैं और उन्हें निकाल सकते हैं। यदि ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती है जहां उन्हें खतरनाक काम करने हैं (उदाहरण, सांपों को उठा लेना, जहरीली चीज़ पी लेना, आदि), तब वे यीशु के नाम में बिना किसी हानि के बच पाएंगे। वे यीशु के नाम में बीमारों को चंगा करेंगे।

सभी विश्वासियों को पावर ऑफ अटर्नी का अधिकार दिया गया है

आज की भाषा में हम कहेंगे कि यीशु ने हमें "पावर ऑफ अटर्नी" दिया है, जो उसके कथित उद्देश्य को पूरा करने हेतु उसके नाम का उपयोग करने का अधिकार है।

बहुत अधिक कानूनी विवरणों में न जाते हुए, सरल भाषा में, पावर ऑफ अटर्नी उस पर निर्भर होता है ...

अ) जो उस नाम के पीछे है—आप उनसे सम्बंधित मामलों में उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं,

आ) उपयोग की सीमा पर निर्भर करता है—आप यह करने के लिए

उसका इस्तेमाल कर सकते हैं, और वह अवधि या समय जिसके दौरान पावर ऑफ अटर्नी कार्य करता है।

यीशु ने हमें उसके नाम का इस्तेमाल करने का विशेषाधिकार और अधिकार दिया है। वह अपने नाम के पीछे है। हम उस व्यक्ति की महानता की झलक पाने के लिए समय देते हैं जिसने हमें उसके नाम का इस्तेमाल करने का विशेषाधिकार दिया है। शायद हमारे हृदय या मन कभी पूर्ण रूप से थह पा नहीं सकेंगे, हमारे शब्द उस महान अधिकार का वर्णन करने के लिए अधूरे होंगे जो हमें दिया गया है, यीशु में उसके नाम का उपयोग करने का अधिकार जो हमें दिया गया है।

हम यहां पर यीशु का प्रतिनिधित्व करने के लिए, उसको प्रगट करने के लिए, उसके राज्य को बढ़ाने के लिए, उसके राज्य का निर्माण करने के लिए, उसकी सेवा करने के लिए, पिता की महिमा करने के लिए और उसके नाम में उसके कामों को करने के लिए हैं। उसने हमें उसका पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दिया है।

जहां तक हम पवित्र शास्त्र से जानते हैं, कलीसिया, पवित्र लोग इस वर्तमान युग में (जिसे "कलीसियाई युग" कहा जाता है) यीशु का प्रतिनिधित्व करेंगे और हज़ार वर्षों के राज्य के दौरान भी (यीशु का 1000 वर्षों का राज्य)। इसलिए हमारा पावर ऑफ अटर्नी का अधिकार जल्द ही खत्म होने वाला नहीं है!

यीशु ने प्रत्येक विश्वासी को, छोटे बच्चे से लेकर, सबसे वृद्ध प्रौढ़ को, उसका पूर्ण प्रतिनिधित्व करने हेतु उसके नाम का इस्तेमाल करने के लिए विशेषाधिकार और अधिकार दिया है। हम में से प्रत्येक उस सामर्थ और अधिकार में चल सकता है, जिसका प्रतिनिधित्व उसका नाम करता है। हमारे पास कैसा विशेषाधिकार है! हमारे हृदय इस

बात को समझने पाएं! यीशु के सामर्थी नाम में हमारे पास जो सामर्थ और अधिकार है उसमें हम उठकर चलने लगें!

यीशु ने प्रत्येक विश्वासी को,
छोटे बच्चे से लेकर, सबसे वृद्ध प्रौढ़ को,
उसका पूर्ण प्रतिनिधित्व करने हेतु
उसके नाम का इस्तेमाल करने के लिए
विशेषाधिकार और अधिकार दिया है।

चिंतन

1) इस अध्याय में प्रस्तुत किए गए पवित्र शास्त्र के वचनों का पुनरावलोकन करें जो स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि हर एक विश्वासी को सामर्थी कामों को करने हेतु और प्रार्थना में यीशु के नाम का इस्तेमाल करने हेतु विशेषाधिकार दिया गया है।

2) यदि विश्वासी का पावर ऑफ अटर्नी अब भी प्रभावी है, तो यह कहना उचित है कि कलीसिया के आश्चर्यकर्मों के दिन प्रारम्भिक कलीसिया के अंत में समाप्त हो गए (या उस समय जब अंतिम प्रेरित की मृत्यु हो गई)? क्या यीशु ने कहीं और दर्शाया कि पावर ऑफ अटर्नी की सीमा या कार्यक्षेत्र पवित्र शास्त्र के लिखे जाने के बाद बदल जाएगा?

6
यीशु के नाम में परमेश्वर पवित्र आत्मा यहां है

यूहन्ना 14:16-18,26
16 और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे;
17 अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुममें होगा।
18 मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं।
26 परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

यूहन्ना 14:26 (एम्प्लिफाईड़ बाइबल, क्लासिक)
परन्तु सहायक (सल्लागार, सहायक, मध्यस्थ, वकील, बल देने वाला, पक्ष खड़े रहने वाला), पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से (मेरे स्थान में, मेरा प्रतिनिधित्व करने के लिए और मेरी ओर से काम करने के लिए) भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

पवित्र आत्मा का उल्लेख करते समय, यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा "दूसरा सहायक" (यूहन्ना 14:16) या *'एलोस पैराक्लेटोस'* है। *'एलोस'* इस शब्द का मतलब है उसके समान दूसरा (**उदाहरण:** दो सेब), जो *'हेट्रोस'* के विपरीत है, "जो भिन्न प्रकार की दूसरी चीज़ है" (**उदाहरण:** सेब और संतरा)। पवित्र आत्मा परमेश्वर है और परमेश्वरत्व का एक व्यक्ति (1 यूहन्ना 5:7)। पवित्र आत्मा पूर्ण रूप से पिता और पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है। पवित्र आत्मा बिल्कुल यीशु

के समान है और यीशु का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है, ताकि यीशु ने कहा, पवित्र आत्मा को भेजने में *"मैं तुम्हारे पास आऊंगा।"* पवित्र आत्मा यीशु का इतने पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करता है कि पवित्र आत्मा को *"मसीह का आत्मा"* (रोमियों 8:9; 1 पतरस 1:11) और *"पुत्र का आत्मा"* (गलातियों 4:6) भी कहा गया है।

पवित्र आत्मा को यीशु के नाम में भेजा गया है। एम्प्लिफाईड बाइबल, क्लासिक संस्करण, स्पष्ट करता है कि *"मेरे नाम में"* का क्या मतलब है। वह बताता है *"मेरे नाम में, मेरा प्रतिनिधित्व करने हेतु और मेरी ओर से काम करने हेतु।"* पवित्र आत्मा यहां पर यीशु के स्थान में है, उसका पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हुए, और उसकी ओर से कार्य करते हुए। इसका मतलब यह है कि पवित्र आत्मा यीशु को प्रगट करेगा, उसे ज्ञात करेगा, और उस हर बात को कहेगा और करेगा जो यदि यीशु स्वयं यहां होता तो कहता और करता।

पवित्र आत्मा यहां पर यीशु के नाम में है।
वह यीशु का स्थान ले रहा है,
पूर्ण रूप से उसका प्रतिनिधित्व करते हुए
और उसकी ओर से कार्य करने हेतु।

यूहन्ना 15:26,27
26 परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।
27 और तुम भी गवाह हो, क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।

पवित्र आत्मा यीशु की गवाही देता है, उसके बारे में बोलता है और यीशु को प्रगट करता है। और हमें भी यीशु की गवाही देने, उसके बारे में बोलने और यीशु को प्रगट करने का कार्य सौंपा गया है।

यूहन्ना 16:14
वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

पवित्र आत्मा यहां पर यीशु के नाम में है और इसलिए वह इस तरह से बोलता और कार्य करता है जिससे यीशु को महिमा प्राप्त होती है। और यह हमारी भी ज़िम्मेदारी है—कि इस संसार में हम यीशु की महिमा करें।

एक महत्वपूर्ण सत्य जो हमें ध्यान में रखना है वह यह है कि पवित्र आत्मा विश्वासी के द्वारा कार्य करता है। इसलिए यीशु के नाम में आने की उसकी क्षमता में, पवित्र आत्मा, विश्वासी के सहयोग से उसका काम पूरा करने की कोशिश करता है।

जैसे यीशु के नाम में पवित्र आत्मा आया है, वैसे ही हमें भी यीशु के नाम से भेजा गया है। इसलिए जब हम "यीशु के नाम में" कहते हैं तो हम अकेले नहीं खड़े होते हैं। जब हम यीशु के नाम में बोलते और काम करते हैं तो परमेश्वर का आत्मा हमारे साथ होता है। वह हर उस चीज़ में हमारे साथ है जो हम यीशु के नाम पर करते हैं। यीशु के नाम में चलने वाले विश्वासी को परमेश्वर के आत्मा के साथ होने का आश्वासन दिया जा सकता है। परमेश्वर का आत्मा हमारे अंदर और हमारे द्वारा इस प्रकार कार्य करेगा कि यीशु की महिमा करे और हमारे द्वारा यीशु को पूरी तरह से प्रकट करे। वास्तव में हमें आश्वस्त किया जा सकता है कि वह हमसे अधिक ऐसा करने के लिए उत्सुक है! हम यहां पवित्र आत्मा के साथ, यीशु के नाम में हैं!

जैसा कि प्रेरितों ने कहा: *"और हम इन बातों के गवाह हैं और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं"* (प्रेरितों के काम 5:32)।

चिंतन

1) पवित्र आत्मा यहां पर यीशु के नाम में है। विश्वासी को भी यीशु के नाम में भेजा गया है। इन सारी बातों का विश्वासी के लिए क्या अर्थ है इस पर विचार करें। इसके प्रकाश में, पवित्र आत्मा के साथ हमारे कामों, अपनी बातचीत, और सहयोग को कैसे बदलें?

7

जब हम यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं तब क्या होता है

जब हम यह घोषणा करते हैं कि हम यीशु के नाम में कुछ कह रहे हैं या कर रहे हैं, तो हम वास्तव में क्या कर रहे हैं? उदाहरण के तौर पर, यदि हम बीमार व्यक्ति पर अपना हाथ रखते हैं, या किसी दूसरे तरीके से बीमार व्यक्ति की सेवा करते हैं तो हम निश्चित तौर पर क्या कर रहे हैं? जब हम दुष्टात्माओं से बोलते हैं, उन्हें यीशु के नाम में निकल जाने की आज्ञा देते हैं, तो यह आत्मिक संसार में वास्तव में क्या दिखाता है? जब हम यीशु के नाम में आंधी से (यह परिस्थिति या हालात हो सकते हैं) या पहाड़ से (यह रुकावट, चुनौती हो सकता है) बोलते हैं, तब हमें क्या अपेक्षा करना चाहिए? जब हम पिता से किसी बात के पूरा होने के लिए प्रार्थना करते हैं, तब पिता इस बिनती को कैसे देखता है? आत्मिक क्षेत्र में, जब हम यीशु के नाम का उपयोग करते हैं, तब कौन सी बातें पूरी होती हैं?

जब हम विश्वासियों के नाते यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं तब हम यीशु द्वारा हमें दिए गए पावर ऑफ अटर्नी का इस्तेमाल कर रहे हैं। हम ऐसा कुछ कर रहे हैं जिसे करने का अधिकार हमें खुद प्रभु यीशु द्वारा दिया गया है। यातायात पुलिस के बारे में सोचें। सड़क पर गाड़ियों की भीड़ हो सकती है। लेकिन जब यातायात पुलिस अपना पोशाक पहने अपना हाथ उठाकर “रुकने” के लिए कहता है, तब सारी गाड़ियां रुक जाती हैं। भौतिक तौर पर उसके लिए गाड़ियों को रोकना असम्भव है। परन्तु क्योंकि उसे स्थानीय शासन द्वारा अधिकार दिया गया है, और वह अपनी पोशाक पहनकर अपने अधिकार का

इस्तेमाल कर रहा है (वही कर रहा है जो करने का अधिकार उसे प्रदान किया गया है), तो गाड़ी चालक उसके अधिकार को पहचानते हैं और अपने वाहनों को रोक देते हैं। तुलना के रूप में, हम कह सकते हैं कि जब हम यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं, तो आत्मिक तौर पर कहा जाए, तो हम अपनी पोशाक पहन रहे हैं, अपने स्वर्गीय अधिकार को थाम रहे हैं और आदेश जारी कर रहे हैं जिसे आत्मिक क्षेत्र पहचानता है और उत्तर देता है।

जब हम कहते हैं "यीशु के नाम में," तब हम हियाव के साथ यह दिखाते हैं कि हम वही कर रहे हैं जो हम यीशु का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके स्थान पर, उसकी ओर से कर रहे हैं, उस कार्य को करने के लिए जो यदि यीशु यहां उपस्थित होता तो करता। वह अपने पूरे अधिकार और सामर्थ के साथ हमारा समर्थन कर रहा है।

जब हम कहते हैं "यीशु के नाम में,"
तब हम हियाव के साथ यह दिखाते हैं कि
हम वही कर रहे हैं जो हम यीशु का प्रतिनिधित्व करते हुए
उसके स्थान पर, उसकी ओर से कर रहे हैं,
उस कार्य को करने के लिए
जो यदि यीशु यहां उपस्थित होता तो करता।
वह अपने पूरे अधिकार और सामर्थ के साथ
हमारा समर्थन कर रहा है।

उसका नाम उसे उस कार्य में ले आता है। यीशु अब यहां है। वह, यीशु अपने नाम में है। उसके नाम में, वह उपस्थित है (मत्ती 18:20)। अब मानो वह बीमारों पर हाथ रखता है जिन पर हम अपने हाथ रख रहे हैं। अब मानो ऐसा है कि यीशु आज्ञा दे रहा है जो कि हम उसके

नाम में देते हैं। यीशु हमारे द्वारा कार्य कर रहा है। वह जो कोई है, अब उस परिस्थिति में सहभागी है।

उसका नाम स्वर्ग के सारे अधिकार को उस परिस्थिति में बुलाता है। जो राजघराना उस नाम के पीछे है, वही राज्य की सामर्थ, प्रभुता, और अधिकार उस नाम के पीछे है, और परिस्थिति में अब कार्य करता है। अब कुछ भी असम्भव नहीं है। सारा अधिकार उसके नाम में है। जब हम यीशु के नाम का इस्तेमाल बीमारी के विरोध में करते हैं, तब बीमारी के पास कोई अधिकार नहीं होता। जब हम दुष्टात्माओं की ताकतों के खिलाफ यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं तब दुष्टात्माओं को कोई अधिकार नहीं होता। वे उस नाम के सामने निर्बल हैं। यीशु के नाम में, राज्य की प्रभुता उस परिस्थिति में लाई जाती है।

उसके नाम में, उसकी सामर्थ उपस्थित है (1 कुरिन्थियों 5:4)। जब हम यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं, तब वह पवित्र आत्मा, मसीह का आत्मा, जिसे उसके नाम में भेजा गया है, बिल्कुल वहीं उपस्थित होता है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ जारी होती है। यीशु के नाम में आज्ञा के जिन शब्दों को हमने कहा है उनके साथ हो लेने के लिए आत्मा की सामर्थ जारी होती है।

जब हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं, तब हम उसके स्थान में, उसकी ओर से खड़े होकर पिता से बिनती करते हैं। यह ऐसा होता है मानो स्वयं यीशु वह बिनती कर रहा है। इसके अलावा दूसरी कोई बात नहीं हो सकती। हमारी प्रार्थना अब उस नाम को हमारे साथ ले चलती है। "यीशु के नाम में" प्रार्थना करना और अपेक्षा करना है कि हमारी प्रार्थना में उसके नाम को न रखना अर्थहीन होगा! जब हमने "यीशु के नाम" का उल्लेख किया है, तो हमने अपनी प्रार्थना में यह व्यक्त किया कि हम यीशु का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके स्थान पर, उसकी ओर से कर रहे हैं, उस कार्य को करने के लिए जो यदि यीशु

यहां उपस्थित होता तो करता। वह अपने पूरे अधिकार और सामर्थ के साथ हमारा समर्थन कर रहा है!

यथार्थ रूप से उसका प्रतिनिधित्व करते हुए

यीशु के नाम में हम वह कहने और करने के लिए उसका प्रतिनिधित्व करते हैं जो वह कहता और करता। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उस बात को कहकर और करके यीशु का उचित प्रतिनिधित्व करें जो यीशु कहता और करता।

इसलिए, यह जानना महत्वपूर्ण है कि किसी भी परिस्थिति में यीशु क्या कहता या करता। हमें अपने मन का नवीनीकरण करना है, अर्थात अपने विचार का, यीशु के अनुसार सोचने के लिए जैसा हम उसे सुसमाचारों में देखते हैं। उदाहरण के तौर पर, यहां पर कुछ बातें हैं जो दिखाती हैं कि यीशु कैसे सोचता था, कैसे बोलता था और चलता था, जैसे सुसमाचारों में देखा जाता है।

उस तूफान में जब उनकी नाव लगभग डूबने पर थी, तब यीशु खामोश था। जब वह जाग उठा, तब उसने तूफान का सामना किया, हवा और लहरों को शांत होने की आज्ञा दी।

जब परिस्थितियां बुरी से बदतर हो जाती हैं, जैसे कि याईर की बेटी के उदाहरण में हुआ, तब यीशु ने केवल कहा, *"मत डर, केवल विश्वास कर।"* जब यीशु याईर के घर के रास्ते पर था, तब वह मर चुकी थी और वह बेटी जिलाई गई।

जब 5000 से अधिक पुरुषों और स्त्रियों और बच्चों को भोजन खिलाने की ज़रूरत का उसे सामना करना पड़ा, तब यीशु ने अपने चेलों से कहा कि उन्हें खाने के लिए कुछ दो। यह एक स्वाभाविक असम्भवनीयता थी, और फिर भी एक छोटे से लड़के के दोपहर के

भोजन से पांच रोटियां और दो मछलियां लेकर उसने प्रार्थना की, और उसे बहुगुणित किया और बांट दिया।

जब उसकी मुलाकात ऐसे व्यक्ति से हुई जिसने हाल ही में यीशु के चेलों की ओर से आत्मिक विफलता का अनुभव किया था, जो उसके बेटे में से दुष्टात्मा नहीं निकाल पाए थे, तब यीशु ने उससे कहा, *"यदि तू विश्वास कर सके, तो विश्वास करने वालों के लिए सबकुछ सम्भव है"* (मरकुस 9:23)।

जब लाजर की मृत्यु हुई और वह चार दिनों से कब्र में पड़ा था, ऐसी निराशाजनक परिस्थिति का सामना होने पर, यीशु ने कहा, *"... यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी"* (यूहन्ना 11:40)।

यह यीशु का मन है। यह यीशु का दृष्टिकोण है। यीशु ने इसी प्रकार कार्य किया और परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया दी। उसने पिता की ओर से यही देखा और सुना।

पवित्र आत्मा की सुनें

यूहन्ना 16:13-15

13 परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।
14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।
15 जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

यीशु के नाम में पवित्र आत्मा यहां है। वह हम में है। वही है जो हमें सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है। वह यीशु की बातों को लेकर उन्हें हमसे कहता है। इसलिए, यीशु का उचित रूप से प्रतिनिधित्व

करने के लिए, हमें परमेश्वर के आत्मा की सुनना सीखना है। वह हम पर मसीह के मन को प्रगट करता है (1 कुरिन्थियों 2:9-16) ताकि हम जानें कि क्या कहना चाहिए और करना चाहिए, ताकि हम यीशु का यथार्थ रूप से प्रतिनिधित्व कर सकें।

चिंतन

1) विभिन्न आत्मिक बातों पर चिंतन करें जो "यीशु के नाम में" प्रार्थना करने, बोलने या कार्य करने पर होती हैं। यह प्रकाशन आपके प्रार्थना करने, व्यक्तिगत जीवन परिस्थितियों का सामना करने में, और जिस तरह से आप ज़रूरतमंद लोगों की सेवा करते हैं उसमें बदलाव लाएगा?

2) मसीह का उचित रूप से प्रतिनिधित्व करने के लिए, जब हम उसके नाम में प्रार्थना करते हैं, बोलते हैं, या कार्य करते हैं, तब हमें

- सुसमाचारों में उसका निकटता से अवलोकन करने और
- पवित्र आत्मा की सुनने के द्वारा मसीह के मन को जानने की ज़रूरत होती है।

इन दो क्षेत्रों में अपना मूल्यांकन करें।

- क्या आपको लगता है कि जैसा कि हमारे लिए सुसमाचारों में लिखा गया है, यीशु विभिन्न परिस्थितियों के बारे में कैसे सोचता था और उनका कैसे उत्तर देता था इस विषय में आपको उत्तम समझ प्राप्त है?
- प्रतिदिन के जीवन की परिस्थितियों में पवित्र आत्मा से बिनती करने, सुनने, के विषय में आप सहज महसूस करते हैं (कुशल हैं)?

(अधिक अध्ययन के लिए, कृपया APC पुस्तकें देखें, **"परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करना", "पवित्र आत्मा के वरदान"** और **"अन्य-अन्य भाषा में बोलने के अद्‌भुत लाभ"** जो **apcwo.org/books** पर मुफ्त डाउनलोड के रूप में उपलब्ध हैं।)

8
यीशु के नाम पर विश्वास करें

यीशु के नाम का उपयोग करना किसी सौभाग्य देने वाला तावीज या "खुल जा सिम सिम" जैसा जादुई शब्द, या कोई मंत्र, रस्म या आत्मिक परंपरा नहीं है जिसका इस्तेमाल अच्छी बातों के घटित होने के लिए माध्यम के रूप में किया जाए। व्यर्थ पुनरोच्चार के रूप में अर्थहीन तरीके से उस नाम को बोलना हमें प्रभु ने जो प्रतिज्ञा की है उसे देखने के लिए सामर्थ प्रदान नहीं करेगा। उस नाम को प्रभावी रूप से बोलने के लिए हमें यीशु के व्यक्तित्व में विश्वास करना होगा और उस नाम के अधिकार में विश्वास करना होगा। चिंतन

उसमें विश्वास करें, उस नाम में विश्वास करें

पवित्र शास्त्र में कई स्थान हैं जहां हमें यीशु के नाम में विश्वास करने के लिए, वैसे ही यीशु मसीह के व्यक्तित्व में विश्वास करने के लिए बुलाया गया है।

कुछ पर विचार करें:

यूहन्ना 1:12
परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।

यूहन्ना 3:18 (यूहन्ना 20:31; 1 यूहन्ना 5:13 भी देखें)
जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

यूहन्ना 6:28,29
28 उन्होंने उससे कहा, परमेश्वर का कार्य करने के लिए हम क्या करें?
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर, जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो।

जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में पाया है, उसके नाम में विश्वास करना उसमें, उसके व्यक्तित्व में विश्वास करना है। हमारे लिए यीशु के नाम में विश्वास करने हेतु, हमें यीशु के व्यक्तित्व को जानना चाहिए और उसमें विश्वास रखना चाहिए, जिसका वह नाम प्रतिनिधित्व करता है।

उस नाम में विश्वास के साथ उस नाम का इस्तेमाल करें

विश्वास के साथ यीशु के नाम का इस्तेमाल करें। इन वचनों पर विचार करें जो हमें यीशु के नाम का इस्तेमाल करते समय विश्वास के महत्व के विषय में सिखाते हैं।

मत्ती 17:19-21
19 तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?
20 उसने उनसे कहा, तुम्हारे अविश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कहोगे कि 'यहां से सरक कर वहां चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए असंभव न होगी।
21 (परन्तु यह जाति प्रार्थना और उपवास के बिना नहीं निकलती)

हम पहले अध्याय 5 में स्पष्ट कर चुके हैं, कि प्रेरित यीशु के नाम पर काम कर रहे थे, बीमारों को चंगा कर रहे थे, दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे और अद्‌भुत कार्य कर रहे थे। वे अच्छे परिणाम देख रहे थे। हालांकि, यहां मत्ती 17 में हमारे पास एक ऐसी स्थिति है जहां चेले एक लड़के में से दुष्टात्मा को निकालने में विफल रहे। निश्चय ही उन्होंने यीशु के नाम का इस्तेमाल किया था, जैसा कि उन्होंने पहले कई बार

किया था। फिर भी लड़के को छुटकारा नहीं मिल पाया। बाद में यीशु आया और उसने लड़के को छुड़ाया। जब चेलों ने कारण पूछा कि वे दुष्टात्मा को बाहर निकालने में सक्षम क्यों नहीं थे, तो यीशु ने एक मुख्य समस्या की ओर संकेत किया—**अविश्वास।** एक समाधान के रूप में उसंने सिर्फ एक राई के दाने के आकार के विश्वास की सामर्थ की ओर इशारा किया। विश्वास के साथ यीशु मसीह के नाम में प्रतिनिधित अधिकार का उपयोग होना चाहिए। प्रार्थना और उपवास अविश्वास को रास्ते से हटाने में मदद करते हैं, ताकि हमारे दिलों में विश्वास पैदा हो सके और इस तरह दुष्टात्माओं का सामना कर सकें।

विश्वास के साथ
यीशु मसीह के नाम में
प्रतिनिधित अधिकार का
उपयोग होना चाहिए।

जब मंदिर के फाटक के पास पतरस और यूहन्ना ने उस व्यक्ति को खड़ा किया जो 40 वर्षों से लंगड़ा था, और उसे पूर्ण रूप से चंगा कर दिया, तब सभी लोग अचंभित रह गए। मंदिर में पतरस ने अपने संदेश में यही कहा :

प्रेरितों के काम 3:16
और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो, सामर्थ दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।

पतरस ने यीशु के नाम और यीशु के नाम में विश्वास की ओर संकेत किया जिसने उस लंगड़े व्यक्ति को चंगा कर दिया था। यह हमारे लिए इस बात पर ज़ोर देता है कि यीशु के नाम को विश्वास से

उस व्यक्ति के नाम में बोला जाना चाहिए जो कि यीशु है और उस परिस्थिति में वह क्या करने की योग्यता रखता है।

हम इसे हमारे लिए फिर एक बार याकूब की पत्री में दोहराया हुआ देखते हैं।

याकूब 5:14,15
14 यदि तुममें कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिए प्रार्थना करें।
15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी।

हमें यीशु के नाम में रोगी की सेवा करना है और विश्वास की प्रार्थना करना है। यह विश्वास से की जाने वाली प्रार्थना है और यीशु के नाम में की जाने वाली प्रार्थना है, जो रोगी को चंगा करेगी। यह फिर एक बार हमें स्पष्ट रूप से सिखाता है कि हमें रोगी व्यक्ति की सेवा करते समय प्रार्थना में यीशु के नाम का उपयोग करते हुए विश्वास का इस्तेमाल करना है। फिर से यह स्मरण दिलाना चाहता हूं कि जिस प्रकार के विश्वास का याकूब उल्लेख करता है वह हमारे लिए अध्याय 1 में वर्णन किया गया है ''बिना संदेह, विचलित न होने वाला, एकचित्त, पूर्ण रूप से निश्चयी विश्वास।" *"परन्तु विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा। वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है"* (याकूब 1:6-8)।

जब हम प्रार्थना में यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं, या जब हम परिस्थितियों पर, बीमारी, दुष्टात्माओं, प्राकृतिक आपदाओं आदि पर अधिकार का इस्तेमाल करते हैं, तो हमें यीशु में **"बिना संदेह, विचलित न होते हुए, एकचित्त के साथ, पूर्ण रूप से निश्चित होने**

वाले विश्वास” के साथ ऐसा करना है।

जब हम प्रार्थना में यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं,
या जब हम परिस्थितियों पर, बीमारी, दुष्टात्माओं, प्राकृतिक आपदाओं आदि पर
अधिकार का इस्तेमाल करते हैं,
तो हमें यीशु में 'बिना संदेह, विचलित न होते हुए,
एकचित्त के साथ, पूर्ण रूप से निश्चित होने वाले विश्वास' के साथ
ऐसा करना है।

चिंतन

1) कल्पना करें कि आप मत्ती 17:14-21 में उल्लेखित प्रेरितों में से एक हैं और एक लड़के में से दुष्टात्मा निकालने की कोशिश कर रहे हैं। अन्य प्रेरितों के साथ आपने नासरत के यीशु मसीह के नाम में आपको दिए गए प्रतिनिधित अधिकार का उपयोग करते हुए इससे पहले ऐसा कई बार किया है। परन्तु आप इस मामले में सकारात्मक परिणाम नहीं देख रहे हैं। इस प्रकार की परिस्थिति में विश्वास को रद्द करने वाले अविश्वास के कुछ कारण क्या हो सकते हैं?
2) हम यीशु नाम व्यक्ति में और उसके नाम में कैसे विश्वास कर सकते हैं और अपने विश्वास को और दृढ़ बना सकते हैं?

9
यीशु के नाम में

विश्वासी होने के नाते हमें उस आदेश को समझना है और उस में चलना है जो प्रभु ने हमें उस समय दिया जब उसने अपने नाम का उपयोग करने का अधिकार हमें प्रदान किया और हमें अपने नाम में भेजा। हमें अधिकार देने वाला प्रभु है, उसने हमें अपने नाम का इस्तेमाल करने का बड़ा विशेषाधिकार और अधिकार प्रदान किया है, इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उस नाम का इस्तेमाल करें और जो वह चाहता है कि हम करें उसे करें। हम उसके नाम में काम करने के लिए कोई बहाना नहीं बनाते, उसका सटीक प्रतिनिधित्व करने के लिए बाहर निकलते हैं, उसके स्थान पर होकर कार्य करते हैं, और उसकी ओर से वह करते हैं जो वह करता यदि वह वहां मौजूद होता। यदि हम "यीशु के समान बनने" की कोशिश करते हैं कि इसमें कोई शर्म की बात नहीं है, क्योंकि हमें उसी के लिए बुलाया गया है। *"क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं"* (1 यूहन्ना 4:17)। हम यीशु के समान जीवन जीते हैं—हम वैसे ही जीते हैं जैसे यीशु जीया - यीशु के समान सोचते हैं, बोलते हैं, कार्य करते हैं, प्रतिक्रिया देते हैं और उसी के समान बर्ताव भी करते हैं (1 यूहन्ना 2:6)। और हम यह यीशु के नाम में करते हैं!

प्रारंभिक कलीसिया इसे समझती थी। ये साधारण सामान्य लोग थे लेकिन वे जानते थे कि यीशु के नाम में कार्य करने का क्या मतलब है। आज विश्वासियों के नाते, हमें भी यह समझना है कि यीशु ने हमें उसके नाम का इस्तेमाल करने का जब अधिकार दिया तब वह हमारे लिए क्या चाहता था।

यीशु के नाम में आपके पास जो है उसे जानें और उस पर कार्य करें

प्रेरितों के काम 3:6,7
6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
7 और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसे उठाया, और तुरन्त उसके पांवों और टखनों में बल आ गया।

पतरस ने कहा : *"जो मेरे पास है वह तुझे देता हूं।"* पतरस जानता था कि उसके पास कुछ है। वह जानता था कि उसके पास नासरत के यीशु मसीह का नाम है। पतरस जानता था कि जिस नाम को इस्तेमाल करने का अधिकार उसे मिला है उसमें क्या है। वह जानता था कि उस नाम में चंगाई है। वह जानता था कि उस नाम में जन्म से चालीस वर्षों से जो व्यक्ति लंगड़ा था उसे चंगा करने की सामर्थ है। और उस विशिष्ट दिन, पतरस जानता था कि प्रभु चाहता था कि उस लंगड़े व्यक्ति को सेवा दे और यीशु के नाम में जो कुछ था उसे दे।

फिर भी, पतरस को कुछ करना पड़ा। उसे यीशु के नाम में बोलना था और कार्य करना था। अन्यथा, पतरस के पास जो नाम था, और उस नाम में जो कुछ था, वह इस लंगड़े व्यक्ति के लिए कोई मूल्य नहीं रखता। इसलिए पतरस ने हियाव के साथ कदम उठाया, और उस लंगड़े व्यक्ति को यीशु के नाम में आज्ञा दी जो कभी उठकर चला न था। उसने यीशु के नाम में हियाव के साथ काम किया और उस व्यक्ति को खड़ा किया। उस नाम ने उसे विफल नहीं किया। उस नाम में जो सामर्थ है, उसने इस व्यक्ति को चंगा कर दिया।

प्रेरितों के काम 4:7
और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, तुमने यह काम किस सामर्थ से और किस नाम से किया है?

प्रेरितों के काम 4:10
तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें कियीशु मसीह नासरी के नाम से, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है।

यह देखना दिलचस्प है कि किस प्रकार इस लंगड़े व्यक्ति की चमत्कारपूर्ण चंगाई के बारे में धार्मिक अगुवों ने पतरस और यूहन्ना से सवाल किए। उनसे पूछा गया कि उन्होंने यह किस "सामर्थ" या *"किस नाम से"* किया था। *"सामर्थ"* के लिए ग्रीक शब्द है *'डुनामिस'* और उसका इस्तेमाल अलौकिक सामर्थ का उल्लेख करने के लिए किया जाता है। इसी शब्द का इस्तेमाल पवित्र आत्मा की सामर्थ का इस्तेमाल करने के लिए किया जाता है (प्रेरितों के काम 1:8)। *"किस नाम से"* यह पूछने का दूसरा तरीका है कि जब आप यह करते हैं "तब आप किसके अधिकार का?" या "किसका प्रतिनिधित्व करते हैं?" पतरस का उत्तर अत्यंत स्पष्ट है। सामर्थ और अधिकार *"नासरत के यीशु मसीह के नाम के द्वारा"* आए। हमें यीशु के नाम में जो सामर्थ और अधिकार उपलब्ध है उसे जानना है। परमेश्वर की सामर्थ और अधिकार तब जारी होता है जब हम यीशु जो चाहता है उसे करने के लिए यीशु के नाम में हियाव के साथ कदम बढ़ाते हैं।

परमेश्वर की सामर्थ और अधिकार
तब जारी होता है
जब हम यीशु जो चाहता है उसे करने के लिए
यीशु के नाम में
हियाव के साथ कदम बढ़ाते हैं।

आप मसीह में कौन हैं यह जानें

हमें प्रतिनिधि के रूप में जो अधिकार दिया गया है उसका उपयोग

करने हेतु आत्मविश्वास को बढ़ाने का महत्वपूर्ण भाग है मसीह में हमारी पहचान को जानना। दुष्टात्माओं, रोग, परिस्थितियों और हालातों पर आत्मिक अधिकार का इस्तेमाल करने की हमारी योग्यता मसीह में हमारी आत्मिक पहचान की हमारी समझ से जुड़ी है। मसीह में हमारे पास जो बाकी सारी बातें हैं, उनमें यह भी है कि हम इस बात को जानें कि परमेश्वर की संतान होने के नाते हमें *"परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस"* (रोमियों 8:17) बनाया गया है । परमेश्वर ने हमें *"मसीहयीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया"* (इफिसियों 2:6) है। मसीह में परमेश्वर के बहुतायत के अनुग्रह और धार्मिकता के वरदान पाने वालों के रूप में हमें इस जीवन में राज्य करने, शासन करने और प्रभुता रखने हेतु स्थान प्रदान किया गया है (रोमियों 5:17)। जब हम यीशु के नाम में कार्य करते हैं, तब हम पिता के दाहिने हाथ पर, सारे क्षेत्रों में सर्वोच्च सिंहासन पर यीशु के साथ जहां हमें बैठाया गया है, वहां से कार्य करते हैं।

हमें इन सच्चाइयों को अपनाना है और उन पर कार्य करना है। जब हम यीशु के नाम में कदम बढ़ाते हैं तब हमें हियाव रखना है और निर्भय रहना है!

इस पुस्तक का शेष भाग

इस पुस्तक में इस बिन्द तक हमने यह समझने में सहायता करने पर ध्यान दिया है कि यीशु के नाम के इस्तेमाल के द्वारा हमें क्या उपलब्ध हुआ है। हमने एक मज़बूत आत्मिक बुनियाद स्थापित करने में काफी समय व्यतीत किया है ताकि हम यह जानें कि यीशु के नाम का इस्तेमाल करने का अधिकार दिए जाने का मतलब क्या है।

इस पुस्तक का शेष भाग संक्षिप्त सरल अध्यायों में यीशु के नाम का हम कैसे उपयोग करते हैं इस बारे में नए नियम की शिक्षा को प्रस्तुत करता है। हम हमारे जीवनों के सभी पहलुओं में यीशु के नाम

का उपयोग करें, जैसा हमारे लिए नए नियम में प्रस्तुत किया गया है।

चिंतन

1) कुछ रोकने वाले कारकों को पहचानें—जो बातें आपके व्यक्तिगत जीवन में या दूसरों की सेवा करते समय यीशु के नाम में हियाव के साथ कदम बढ़ाने से रोकती हैं। आप इन पर कैसे जय पा सकते हैं?

10
यीशु के नाम में क्षमा

लूका 24:47
और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा।

प्रेरितों के काम 10:43
उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।

1 यूहन्ना 2:12
हे बालको, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए।

यीशु के नाम में पापों की क्षमा मिलती है।

सबसे पहले व्यक्तिगत स्तर पर, यह जानें कि हमें उसके नाम के कारण या उसके नाम के निमित्त पापों की क्षमा मिली है। "यीशु" का नाम उस व्यक्ति का नाम है जिसने हमारे सारे पापों की कीमत चुकाई। उसका बलिदान पापों के लिए हमेशा का, पूर्ण बलिदान था। जब हम उसमें विश्वास रखते हैं और उसके नाम में पापों की क्षमा पाते हैं, तो हमें पापों की क्षमा पाने के लिए और कुछ करने की ज़रूरत नहीं होती। हमें मात्र उसने जो किया है उसमें, वह जो है उसमें और उसके नाम में विश्वास की ज़रूरत है।

यह इतना सरल और इतना रोमांचक है कि यीशु के नाम में पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। विश्वासियों के रूप में यदि हम पाप करते हैं, तो हम यीशु के नाम में उन्हें कबूल करते हैं और क्षमा प्राप्त करते हैं। जब

हम कहते हैं, "पिता, कृपया मुझे यीशु के नाम में क्षमा करें," तो हम उस व्यक्ति के नाम से बिनती कर रहे हैं जिसने हमारे पापों की कीमत पहले ही चुका दी है। जबकि पश्चाताप महत्वपूर्ण है, परमेश्वर हमें हमारे आंसू, दुःख, अपराध या पछतावे के कारण नहीं, बल्कि उसके कारण क्षमा करता है जिसके नाम में हमने क्षमा मांगी है। जिसने हमारे सभी पापों की कीमत चुकाई है वह वहीं पिता की उपस्थिति में हमारी ओर से खड़ा है (1 यूहन्ना 2:1,2)। *"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुध्द करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है"* (1 यूहन्ना 1:9), *"... पुत्रयीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है"* (1 यूहन्ना 1:7)।

दूसरा, हमें यीशु के नाम में पश्चाताप और पापों की क्षमा के बारे में प्रचार करना (साझा करना, दूसरों को बताना) है। जब हम सुसमाचार सुनाते हैं तो हम दूसरों को बताते हैं कि उनके पापों को यीशु के नाम में विश्वास के द्वारा और जो उसने क्रूस पर उनके लिए किया है, उसके द्वारा क्षमा किया जा सकता है। हमें दूसरी कोई शर्त नहीं रखनी चाहिए जैसे कि हमारे स्थानीय चर्च में शामिल होना या कुछ और करना जो उन्हें उनकी क्षमा खरीदने समान प्रतीत हो। जो कोई उस पर विश्वास करता है, उसे उसके नाम से पापों की क्षमा मिलती है।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 14 के बाद दिया गया है।)

11
यीशु के नाम में उद्धार

मत्ती 1:21
वह पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नामयीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।

हमने पहले अध्याय में देखा कि "यीशु" नाम का मतलब है "उद्धारकर्ता" या "परमेश्वर जो उद्धार है।" हमने यह भी समझाया कि नए नियम में *'सेजो'* यानि "उद्धार" एक सर्व समावेशी शब्द है जिसमें अनंत उद्धार, पापों की क्षमा, पाप पर विजय, रोग से चंगाई, संघर्ष में विजय, शत्रु के हर काम से छुटकारा, हानि से बचाव, खतरे से रक्षा, और पूर्ण स्वास्थ्य समाहित है। यहाँ सेजो का मतलब है "उद्धार पाना, चंगा किया जाना, छुटकारा पाना, विजयी होना, छुड़ाया जाना, सुरक्षित रखा जाना, और स्वस्थ किया जाना।" यीशु के नाम में उद्धार है।

प्रेरितों के काम 4:12
और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

बाइबल इस बात पर ज़ोर देती है कि केवल यीशु के नाम में उद्धार है। इसीलिए हमें यीशु के बारे में बताना है ताकि लोग उसे जानें और उसके नाम को पुकारें।

रोमियों 10:13
क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

सुसमाचार यह है कि कोई भी यीशु के नाम को पुकारकर उद्धार पा सकता है।

याद रखें कि उद्धार में मात्र पापों की क्षमा से बढ़कर बहुत कुछ है। विश्वासियों के नाते हम चंगाई के लिए, छुटकारे के लिए, सुरक्षा के लिए और संरक्षण के लिए—जो कुछ उसके नाम में है उसके लिए—प्रभु के नाम को पुकार सकते हैं—और पवित्र शास्त्र कहता है कि हम उद्धार पाएंगे। याद रखें कि उस नाम में उद्धार है। हम यीशु में विश्वास रखते हुए उस नाम को पुकार सकते हैं, उसका उल्लेख कर सकते हैं और हियाव के साथ उस नाम की घोषणा कर सकते हैं, और हमारा उद्धार होगा।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 14 के बाद दिया गया है।)

12
यीशु के नाम में अनंत जीवन

यूहन्ना 1:12
परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।

यूहन्ना 3:18
जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

यूहन्ना 20:30,31
30 यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए।
31 परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो कियीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

1 यूहन्ना 5:13
मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है, कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।

जब हम यीशु मसीह में विश्वास करते हैं तब हम नया जन्म पाते हैं, उसके बेटे और बेटियों के रूप में परमेश्वर के परिवार में जन्म लेते हैं, क्योंकि उसने अपने विषय में जो कहा उसे और उस नाम को अपना लें। जब हम उसके नाम में विश्वास करते हैं तब हम यहां और अभी अनंत जीवन पाते हैं। हम जान सकते हैं, निश्चित हो सकते हैं, भरोसा रख सकते हैं कि हमारे पास अनंत जीवन है। और परमेश्वर हमें यही करने की आज्ञा देता है, उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम में विश्वास

करने की (1 यूहन्ना 3:23)।

"यीशु" का नाम हमें अनंत जीवन देता है, परमेश्वर का जीवन, (ग्रीक *'ज़ोए'*) परमेश्वर सदृश्य जीवन। यीशु हमें बहुतायत का अनंत जीवन देने के लिए आया है। यह जीवन हमें ज्योति से भर देता है और अंधकार को हमारे जीवनों से दूर करता है (यूहन्ना 1:4,5)। "यीशु" के नाम का उल्लेख यीशु को जो जीवन है उस स्थान पर ले आता है। जहां जीवन है वहां मौत से सम्बंधित बातें दूर हो जाती हैं। जहां जीवन है वहां अंधकार दूर हो जाता है। उस नाम को बोलें, उस नाम को घोषित करें, उस नाम को गाएं, और मृत्यु और अंधकार को जाते देखें, क्योंकि उसका नाम जीवन और ज्योति है, परमेश्वर सदृश्य जीवन और परमेश्वर की ज्योति।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 14 के बाद दिया गया है।)

13

यीशु के नाम में धोए गए, पवित्र हुए, धर्मी ठहरे

1 कुरिन्थियों 6:9-11

[9] क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ; न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी;
[10] न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।
[11] और तुममें से कई ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।

प्रेरितों के काम 22:16

अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।

कुरिन्थुस की कलीसिया के विश्वासियों के समान, हम सभों के भूतकाल में ऐसी बातें हैं जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं। अद्‌त समाचार यह है कि हम प्रभु यीशु मसीह के नाम में और हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा धोए गए, पवित्र किए गए, और धर्मी ठहरे हैं।

"धोए गए" (ग्रीक *'अपोलोउ'*) इस शब्द का अर्थ है "धोना, पूरे व्यक्तित्व को धोना।" जब हम प्रभु यीशु के नाम को पुकारते हैं, तब परमेश्वर की दया से यीशु मसीह के लहू के द्वारा हम अपने पापों से धो दिए जाते हैं। हम यीशु के नाम में शुद्ध हैं। हमारे किसी भी पाप का दाग हम पर दिखाई नहीं देता!

“पवित्र किए गए” (ग्रीक *‘हागियाज़ो’*) इस शब्द का अर्थ है “पवित्र करना, अलग करना, समर्पित करना, परमेश्वर के लिए पाप से अलग करना।” हमें अलग किया गया है, संसार से और परमेश्वर के लिए अलग किया है, और यीशु के नाम में उसका अपना बना दिया गया है।

“धर्मी ठहरे” (ग्रीक *‘डिकाइओ’*) इस शब्द का अर्थ है “धर्मी, सब प्रकार की दोष भावना, शर्म, न्याय, और दण्ड से मुक्त घोषित करना”। हमें यीशु के नाम में विश्वास से अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराया गया है।

हमें हियाव के साथ घोषित करना है कि हम यीशु के नाम में धोए गए, पवित्र किए गए और धर्मी ठहरे। शैतान की रणनीतियों में से एक है हमें गंदा, पापमय, अपवित्र, अयोग्य, दंडित, दोषी और लज्ज़ित महसूस कराना। यदि शत्रु हमारे मन में इस प्रकार की भावनाएं डाल सकता है, तो हम निर्बल हो जाते हैं और परमेश्वर की सेवा करने के लिए अयोग्य महसूस करते हैं। परन्तु हमें हियाव के साथ यीशु मसीह के नाम में जो हमारा है उसकी घोषणा करना है। खुद प्रभु यीशु ने हमारे लिए प्रावधान किया है कि हम धोए जाएं, पवित्र किए जाएं, और धर्मी ठहरें।

जब हम लोगों को गहरे पाप में देखते हैं, तब हमें हमेशा उनकी ओर आशा की नज़रों से देखना है। प्रभु यीशु उन्हें धो सकता है, पवित्र कर सकता है, और धर्मी ठहरा सकता है, जैसा उसने हमारे साथ किया! प्रार्थना करें और अपेक्षा करें कि उनके साथ ऐसा हो। लोगों को यीशु के नाम में और पवित्र आत्मा की सामर्थ से पाप के सभी स्वरूपों से बाहर निकाला जा सकता है—धोया जा सकता है, पवित्र किया जा सकता है और धर्मी ठहराया जा सकता है। उन पर अपेक्षा के साथ यीशु के नाम की घोषणा करें।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 14 के बाद दिया गया है।)

14
यीशु के नाम में बपतिस्मा पाना

मत्ती 28:19
इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।

प्रेरितों के काम 2:38
पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

महान आदेश में यीशु ने हमें आज्ञा दी है कि हम चेलों को *"पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा"* दें।" अन्य बातों के साथ ही साथ, पानी का बपतिस्मा जिस व्यक्ति में आप बपतिस्मा ले रहे हैं उसके साथ समानता और अधीनता की सामर्थी अभिव्यक्ति है। इस उदाहरण में हम बाइबल के परमेश्वर, त्रिएक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ समानता स्थापित कर रहे हैं और उसके आधीन हो रहे हैं।

प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, पिन्तेकुस्त के दिन से आरंभ करते हुए (प्रेरितों के काम 2:28) हमारे पास सामरिया के नए विश्वासियों के बारे में (प्रेरितों के काम 8:16), कुर्नेलियुस के घराने के बारे में (प्रेरितों के काम 10:48), और इफिसुस के विश्वासी (प्रेरितों के काम 19:5) और अन्य कइयों के यीशु के नाम में बपतिस्मा पाने के उदाहरण हैं। उन्होंने "बपतिस्मा के इस सूत्र" का—पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से अनुसरण किया या नहीं इस बारे में कुछ लिखा नहीं है। अर्थात यह बड़ी चिंता का मुद्दा है। परन्तु, हम सुरक्षित तौर पर यह

मान सकते हैं कि प्रेरितों ने और उनके बाद जो आए उन्होंने निर्देशों का कठोरता के साथ पालन किया और सचमुच "बपतिस्मा के सूत्र" के साथ बपतिस्मा दिया जैसे उन्हें प्रभु यीशु द्वारा सिखाया गया था।

यीशु के नाम में बपतिस्मा लेने के लिए नए विश्वासियों को प्रेरितों द्वारा निमंत्रित किया गया और उसके बाद यीशु के नाम में उन्हें बपतिस्मा दिया गया इस बारे में जो लिखा गया है उससे दो महत्वपूर्ण बातें दिखाई देती हैं।

1) नए विश्वासियों को विश्वास करना पड़ा और यीशु मसीह ने अपने विषय में जो कहा कि वह जो है उसके साथ पहचान स्थापित करना पड़ा कि वह सचमुच देहधारी परमेश्वर, परमेश्वर का पुत्र है, जो पिता की ओर से आया, जिसने हमारे उद्धार की पूरी कीमत चुकाई, पवित्र आत्मा के द्वारा जिलाया गया और पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है।

2) लोगों के यीशु के नाम में बपतिस्मा देते समय, जो व्यक्ति पानी का बपतिस्मा देता है वह यीशु का प्रतिनिधित्व करते हुए, उसके स्थान में उसकी ओर से कार्य करते हुए और जो वह चाहता है उस तरह करते हुए ऐसा करता है। इसलिए आज, जब हम जल का बपतिस्मा देते हैं तो हम 'यीशु के नाम में' घोषणा करते हैं और कहते हैं "मैं तुझे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देता हूं" और फिर उस व्यक्ति को पूरी तरह से पानी में डूबोते हैं।

जब यीशु के नाम में हमारा बपतिस्मा किया जाता है तब हम यीशु मसीह के साथ हमारी आत्मिक समानता की जाहीर घोषणा करते हैं (आत्मिक रीति से पानी में डूबाए जाते हैं, एकता में लाए जाते हैं)। जैसा कि गलातियों 3:27 में कहा गया है, *"और तुममें से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है।"* हमने मसीह को पहन लिया है और अब हमारे द्वारा यीशु पूर्ण रूप से दिखाई देना

चाहिए। पैशन अनुवाद में इस वचन को इस प्रकार लिखा गया है : *"विश्वास ने तुम्हें यीशु में, जो अभिषिक्त है डूबो दिया, और अब तुम उसके अभिषेक से ढांके गए हो और तुमने उसके अभिषेक को पहन लिया है।"* इसे सरल शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है, जैसे मसीह हम में जीता है, बोलता है और काम करता है वैसे ही जीने के द्वारा हमने इस संसार में यीशु का पूर्ण रूप से और उचित रीति से प्रतिनिधित्व करने के लिए उसकी बुलाहट को "हां" कहा है। हम यहां उसके नाम में हैं।

उसके नाम में क्षमा, उद्धार, और अनंत जीवन है।
हम उसके नाम में धोए गए,
पवित्र किए गए और धर्मी ठहरे हैं।
हमने उसके नाम में बपतिस्मा लिया है।

चिंतन

यह अध्याय 10 से 14 के लिए है।

1) इस सत्य पर चिंतन करें कि यीशु के नाम में पापों की क्षमा, उद्धार और अनंत जीवन है। इसका आपके लिए व्यक्तिगत तौर पर क्या अर्थ है? दूसरों की सेवा करते समय आप इस सत्य का कैसे इस्तेमाल करते हैं?

2) इस सत्य पर चिंतन करें कि आप यीशु के नाम में धोए गए, पवित्र किए गए, और धर्मी ठहरे हैं। इसका आपके लिए व्यक्तिगत तौर पर क्या अर्थ है? दूसरों की सेवा करते समय, आप इस सत्य को कैसे लागू करते हैं?

3) यीशु के नाम में पानी में बपतिस्मा लेने का क्या अर्थ है (आत्मिक महत्व) जब *"पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में"* (मत्ती 28:19) इस "बपतिस्मा सूत्र" का उच्चारण किया जाता है जैसा कि यीशु द्वारा हमें दिए गए महान आदेश में सिखाया गया है?

15
यीशु के नाम में प्रार्थना करें

यूहन्ना 14:13,14
13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।
14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

यूहन्ना 15:7,16
7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुममें बनी रहें तो जो चाहो मांगो, और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।
16 तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया है ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे।

यूहन्ना 16:23,24,26,27
23 उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे; मैं तुमसे सच सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।
24 अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।"
26 उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिए पिता से बिनती करूंगा।
27 क्योंकि पिता तो आप ही तुमसे प्रीती रखता है, इसलिए कि तुमने मुझ से प्रीती रखी है, और यह भी प्रतीति की है कि मैं पिता से निकल आया।

यीशु ने हमें जिन क्षेत्रों में उसके नाम का इस्तेमाल करने के लिए कहा है उनमें से एक है प्रार्थना। उसने हमें आज्ञा दी कि हम पिता से उसके नाम में सीधे तौर पर मांगें। उसने आश्वासन दिया कि जब हम ऐसा करेंगे तो हमें वह मिलेगा जिसे हमने मांगा है, ताकि हमें बहुतायत का आनंद प्राप्त हो।

अब हम विचार करें कि यीशु के नाम में प्रार्थना करने का क्या मतलब है। जब हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं, तो मानो स्वयं यीशु यहां पृथ्वी पर प्रार्थना करता है। हम यहां उसके स्थान में खड़े हैं, उसका प्रतिनिधित्व करते हैं, उसकी ओर से कार्य करते हैं और वह प्रार्थना करते हैं जो यीशु करता यदि वह यहां पृथ्वी पर होता। और स्वर्ग में, मानो स्वयं यीशु यह प्रार्थना परमेश्वर के सम्मुख रखता है, जिसे पिता कभी इन्कार नहीं करेगा। यह प्रार्थना को पूर्ण रूप से भिन्न स्तर पर रखता है, यीशु के नाम में की गई हमारी प्रार्थनाओं को अत्याधिक महत्व देता है। यीशु के नाम में जो प्रार्थना हम करते हैं, उस हर एक प्रार्थना पर यीशु के हस्ताक्षर हैं। हमें आश्वासन मिला है कि जो कुछ हम यीशु के नाम में मांगेंगे वह हमें देगा। "प्रार्थना में ऐसी सामर्थ" का रहस्य यह है कि उसका वचन हम में वास करता है और हम उसके साथ पूर्ण एकता में बने रहते हैं (यूहन्ना 15:7)। यीशु के नाम में हमारी प्रार्थनाएं उसके साथ हमारी पूर्ण एकात्मता से प्रवाहित होनी चाहिए। ऐसी प्रार्थनाओं को पिता कभी इन्कार नहीं करेगा।

ऊपर सूचीबद्ध किए गए पवित्र शास्त्र के वचनों में उत्तरित प्रार्थना का सम्बंध हमारे जीवनों में पिता के महिमान्वित होने से जुड़ा है, ताकि हम स्थायी फल लाएं और हमारा आनंद उमड़ता रहे। पिता हमारे लिए चाहता है कि हम अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाकर इन विशेषाधिकारों का आनंद अनुभव करें, क्योंकि हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 17 के बाद दिया गया है।)

16

यीशु के नाम में धन्यवाद दें और आराधना करें

1 कुरिन्थियों 1:2

परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं।

इफिसियों 5:18-21

18 और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।
19 और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।
20 और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।
21 और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो।

कुलुस्सियों 3:16,17

16 मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।
17 और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

इब्रानियों 13:15

इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।

हमें सिखाया गया है कि हम प्रभु यीशु मसीह के नाम में अपने धन्यवाद, अपनी स्तुति, अपनी आराधना को ऊपर उठाएं। जब हम आराधना करने लगते हैं तब हम कहते हैं, "पिता, हम यीशु के नाम में आपकी आराधना करते हैं।" उसका नाम हमें पिता की उपस्थिति में प्रवेश देता है। इसी नाम ने हमें परमेश्वर की उपस्थिति में स्वीकार किया, धो दिया, पवित्र किया और धर्मी ठहराया। यही नाम है जो हमारे बलिदानों को परमेश्वर के सामने प्रसन्नतादायक और स्वीकारणीय बनाता है। क्योंकि यह नाम उसका प्रतिनिधित्व करता है जिसने हमें अपने खुद के लहू में धोया है और हमें परमेश्वर के लिए राजा और याजक बनाया है। वह उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिसने हमारे लिए क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा एक नया और जीवित मार्ग खोल दिया है, और जिसका लहू हमें अति पवित्र स्थान में प्रवेश करने हेतु हियाव देता है। इसी नाम में और केवल इसी नाम में हम हमारी स्तुति, आराधना और धन्यवाद देते हैं।

इसलिए, जब हम हमारे परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं, तब हम इस सत्य में विश्राम करते हैं। हमारे बलिदान हमारे गुण के कारण स्वीकारणीय नहीं हैं, हमारी अपनी धार्मिकता के कारण नहीं या उस किसी बड़े काम के कारण नहीं जो हमने किया। स्तुति, आराधना, और धन्यवाद के हमारे बलिदान परमेश्वर के सामने सुखदायक सुगंध हैं, क्योंकि उन्हें यीशु मसीह के नाम में भेंट अर्पण किया जाता है।

पुराने नियम में, याजक पवित्र स्थान में सेवक थे, जो लोगों द्वारा लाई गई भेंटों को स्वीकार करते थे और उसे परमेश्वर के सामने अर्पण करते थे। ये याजक ऐसे लोग थे, जो स्वयं निर्बल थे और परमेश्वर द्वारा नकारे जा सकते थे। परन्तु, यीशु हमारा महायाजक, स्वर्गीय पवित्र स्थान में सेवक है। *"अब जो बातें हम कह रहे हैं, उनमें से सब से बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा, और पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का*

सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, वरन् प्रभु ने खड़ा किया था" (इब्रानियों 8:1,2)। हमारी स्तुति, आराधना, धन्यवाद, हमारे दशवांश और भेंटें यीशु के नाम में चढ़ाए जाते हैं, तब वह हमारी ओर से हमारे महायाजक, जो स्वर्गीय पवित्र स्थान में सेवक है पहुंचाई जाती हैं और पिता के सम्मुख अर्पित की जाती हैं। जब हम यीशु के नाम में अपने आत्मिक बलिदानों को चढ़ाते हैं तब यही होता है!

(इस पर **चिंतन** अध्याय 17 के बाद दिया गया है।)

17
यीशु के नाम में सब बातों को करें

कुलुस्सियों 3:16,17
16 मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।
17 और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

जो कुछ हम करते हैं, प्रत्येक गतिविधि, प्रत्येक छोटी बात, उसमें पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है कि हम सबकुछ हमारे प्रभु यीशु के नाम में करें! हम यह करें। याद रखें कि अध्याय 7 में हमने पहले ही जान लिया है कि जब हम यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं तब क्या होता है। जब हम "यीशु के नाम में" घोषणा करते हैं तब वह यीशु को उस स्थान में लाता है। उसकी उपस्थिति, उसकी सामर्थ, उसका अधिकार और उसका आत्मा सभी अब इस बात में सहभागी हैं। जो कुछ वह है अब इस स्थिति में प्रगट है क्योंकि हमने उसके नाम को पुकारा है, घोषणा की है कि हम उसके नाम में कार्य कर रहे हैं।

- जब आप सुबह जाग उठते हैं, ज़मीन पर अपने कदम रखते हैं, तब आप घोषित करते हैं "मैं यीशु के नाम में यह दिन बिताने वाला हूं। मैं विजय, आशीष, शांति, आनंद, बुद्धि और सम्पन्नता के मेरे सारे मार्गों पर यीशु के नाम में घोषणा करता हूं।"
- जब आप भोजन पकाते समय यह घोषणा करते हैं "मैं आज यीशु के नाम में भोजन पकाती हूं।"

- जब आप गाड़ी चलाने के लिए गाड़ी में बैठते हैं, आप घोषणा करते हैं "मैं यीशु के नाम में आज गाड़ी चलाता हूं।"
- जब आप व्यापार की बैठक के लिए जाते हैं, तब आप घोषित करते हैं "मैं यीशु के नाम में इस सभा में जाता हूं।"
- जब आप किसी की सहायता करते हैं, सेवा करते हैं, किसी के लिए प्रार्थना करते हैं, उनकी ज़रूरतों को पूरा करते हैं, उनकी ज़रूरत के लिए देते हैं, चंगाई या छुटकारे की सेवा करते हैं, तो यीशु के नाम में वह करें।

जो कुछ आप करते हैं, उसे यीशु के नाम में करने की घोषणा करें। उसके बाद उचित रीति से यीशु का प्रतिनिधित्व करें। उस बात को सोचें, कहें, और करें जो यीशु करता। पवित्र आत्मा से बिनती करें कि वह इस बात में आपकी सहायता करें। *"आपके जीवनों की प्रत्येक गतिविधि और आपके होठों से निकलने वाला प्रत्येक शब्द हमारे प्रभु यीशु मसीह, अभिषिक्त की सुंदरता से सरोबार हो।"* (कुलुस्सियों 3:17, जैसा कि अंग्रेजी बाइबल संस्करण -द पैशन ट्रांस्लेशन में अनुवादित है)

हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर
यीशु के नाम में मिलता है।
स्तुति, आराधना और धन्यवाद की हमारी भेंटें
यीशु के नाम में स्वीकार की जाती हैं।
जो कुछ हम कहते और करते हैं,
उसे हम यीशु के नाम में करें।

चिंतन

यह अध्याय 15 से 17 के लिए है।

1) यीशु के नाम में पिता से प्रार्थना करने के महत्व पर चिंतन करें? आपकी सभी प्रार्थनाओं का उत्तर पाते हुए देखने के लिए और जो यीशु ने कहा कि आपके प्रार्थना जीवन के लिए आपका हो सकता है उसमें चलने के लिए, आप "प्रार्थना में सामर्थ" कैसे पा सकते हैं?

2) जब आप यीशु के नाम में आपके आत्मिक बलिदानों को चढ़ाते हैं तब क्या होता है इस पर चिंतन करें? इससे आप परमेश्वर को जो अर्पण कर रहे हैं उससे परमेश्वर प्रसन्न है या नहीं इस बारे में आपके सारे सवालों और संदेह को दूर करने में कैसे सहायता मिलती है?

3) जब आप यह घोषणा करते हैं कि आप यीशु के नाम में कुछ करते हैं, वह चाहे जो भी हो, घर में, कार्यस्थल में या और कहीं, तो उसका क्या अर्थ होता है इस पर चिंतन करें। अध्याय 7 से अंतर्दृष्टियां लागू करें जहां यह स्पष्ट किया गया है कि जब हम यीशु के नाम का इस्तेमाल करते हैं तब क्या होता है।

18
हम यीशु के नाम में इकट्ठा होते हैं

मत्ती 18:18-20
18 मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बान्धा जाएगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खोला जाएगा।
19 फिर मैं तुम से कहता हूं कि यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन के होकर मांगे, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिए हो जाएगी।
20 क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।

1 कुरिन्थियों 5:4
कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु के नाम से ...

प्रभु यीशु ने यह प्रगट किया कि जब दो या तीन उसके नाम में इकट्ठा होते हैं, तब वह वहां उपस्थित होता है। जैसा कि पहले बताया गया है, उसका नाम उसे ले आता है! वह, यीशु उसके नाम में उपस्थित है। जब हम उसके नाम में विश्वासियों के रूप में इकट्ठा होते हैं, तब हम एक साथ कई बातें कर सकते हैं। हम आराधना कर सकते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं, उसके वचन का अध्ययन कर सकते हैं, संगति कर सकते हैं, प्रोत्साहन दे सकते हैं और एक दूसरे की सेवा कर सकते हैं। ऊपर उल्लेख किए गए मत्ती के अनुच्छेद में, हम विशिष्ट रूप से देखते हैं कि जब प्रभु हमारे मध्य में उपस्थित होता है, तब हम उसके अधिकार और सामर्थ से प्राप्त कर सकते हैं और उसके द्वारा सहमति की प्रार्थना (यीशु के नाम में इकट्ठा लोग प्रार्थना में एक साथ सहमत होते हैं) के माध्यम से और "बांधने और खोलने" के माध्यम से पृथ्वी के

मामलों में उसका परिणाम ले आते हैं।

प्रेरित पौलुस ने कहा कि विश्वासी जब हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में इकट्ठा होते हैं, तब हमारे प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ भी वहां उपस्थित होती है।

जब हम विश्वासियों के रूप में यीशु के नाम में इकट्ठा होते हैं, चाहे दो हो, तीन हो या हम में से कई हों, यीशु वहां उपस्थित होता है। उसकी सामर्थ वहां उपस्थित होती है कि हम उससे प्राप्त करें और हम से सम्बंधित बातों को प्रभावित करें। हमें सहमत होना है, एक हृदय और एक मन होना है, और सहमति की प्रार्थना के द्वारा हमारे प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ को लागू करना है ताकि वह उन परिस्थितियों में कार्य करें जिनके बारे में हम प्रार्थना करते हैं। हम पृथ्वी पर बांधते और खोलते हैं, पिता की इच्छा के अनुसार पृथ्वी पर कुछ बातों की अनुमति देते हैं और मनाई करते हैं, और स्वर्ग इसे समर्थन देता है। जब हम यीशु के नाम इकट्ठा होते हैं, तब हमारे लिए सामर्थ, प्रभुता, और अधिकार के बड़े क्षेत्र उपलब्ध होते हैं। यीशु ने हमारे लिए जो कुछ उपलब्ध कराया है, उसका इस्तेमाल करें।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 19 के बाद दिया गया है।)

19

यीशु के नाम में एक दूसरे को ग्रहण करें, आदर दें और आशीष दें

मत्ती 10:41,42

41 जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का प्रतिफल पाएगा; और जो धर्मी को धर्मी जानकर ग्रहण करे, वह धर्मी का प्रतिफल पाएगा।
42 जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाएगा, मैं तुमसे सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा।

मरकुस 9:37 (मत्ती 18:5; लूका 9:48 भी देखें)

जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।

इब्रानियों 6:10

क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुमने उसके नाम के लिए इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो।

3 यूहन्ना 1:5-8

5 हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी के समान करता है।
6 उन्होंने मण्डली के सामने तेरे प्रेम की गवाही दी थी। यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिए उचित है, तो अच्छा करेगा।
7 क्योंकि वे उस नाम के लिए निकले हैं, और अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते।
8 इसलिए ऐसों का स्वागत करना चाहिए, जिससे हम भी सत्य के पक्ष में उनके सहकर्मी हों।

जब हम यीशु के नाम के कारण किसी का आदर करते हैं तो हम स्वयं यीशु का आदर करते हैं। यह चाहे दूसरा चेला हो, एक छोटा बच्चा क्यों न हो, या सुसमाचार का सेवक हो, जब हम यीशु के नाम के कारण उन्हें आदर देते हैं, तब हम प्रभु यीशु और पिता को आदर देते हैं। यीशु के नाम में हम जो भलाई करते हैं, चाहे वह किसी को ठंडे जल का प्याला देने जैसा साधारण काम क्यों न हो, या दूसरा काम और प्रेम का परिश्रम, वह हम स्वयं प्रभु के लिए करते हैं। जब हम प्रभु के नाम में सेवा के लिए बाहर जाने वालों का आदर करते हैं, उन्हें आशीष देते हैं और उनकी सहायता करते हैं, तब हम परमेश्वर के राज्य के लिए उनके काम में सहभागी होते हैं। और प्रभु इन बातों को याद करेगा और हमें प्रतिफल देगा।

हमें यीशु के नाम में एक दूसरे को ग्रहण करने और एक दूसरे का आदर करने के महत्व को समझना है। सच्चाई यह है कि हमें वह हर व्यक्ति हमेशा 'पसंद' न आए। हो सकता है कि हम हर एक व्यक्ति के साथ हर बात में सहमत न हों। परन्तु फिर भी हम यीशु मसीह के नाम में एक दूसरे से प्रेम, आदर में चल सकते हैं और एक दूसरे को आशीषित कर सकते हैं।

पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है कि *"जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विषेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं"* (1 तीमुथियुस 5:17), उन्हें *"दो गुना आदर"* दें, परन्तु हमें यह नहीं सोचना है कि परमेश्वर के छोटे संतों को आशीष देना कम महत्वपूर्ण है। याद रखें कि यीशु ने कहा : *"... तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया"* (मत्ती 25:40)। जो कुछ हम करते हैं, चाहे छोटा हो या बड़ा, जब हम उसे यीशु के नाम में करते हैं, चाहे परमेश्वर के छोटे पवित्र जन के लिए हो या परमेश्वर के सुविख्यात सेवक के लिए, वह हम यीशु के लिए कर

रहे हैं। यही महत्वपूर्ण है। जब हम ऐसा करते हैं तब हम यथार्थ रूप से यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं।

[**टिप्पणी:** सावधानी के रूप में, हमें *"सांपों के समान चालाक"* बनना है, और दूसरों को अनुमति नहीं देना है कि वे हमारी दयालुता का गलत लाभ उठाएं और हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए समय, बल, और पैसों को "चेलों के नाम में" बर्बाद कर दें।]

जब हम यीशु के नाम में इकट्ठा होते हैं,
तब यीशु वहां होता है और उसकी सामर्थ उपलब्ध होती है!
जब हम यीशु के नाम में एक दूसरे का आदर करते हैं
और एक दूसरे को आशीष देते हैं,
तब हम यीशु को और पिता को आदर देते हैं!

चिंतन

यह अध्याय 18 और 19 के लिए है।

1) इस सत्य पर चिंतन करें कि जब हम यीशु के नाम में इकट्ठा होते हैं, तब यीशु उपस्थित होता है और उसकी सामर्थ उपलब्ध होती है। यीशु ने मत्ती 18:18-20 में हमें क्या निर्देश दिए जो हमें सिखाते हैं कि हम उसकी उपस्थिति और सामर्थ से कैसे प्राप्त कर सकते हैं और पृथ्वी के मामलों में उनका प्रभाव कैसे ला सकते हैं?

2) आप यीशु के नाम में दूसरों को आदर देने और उन्हें आशीषित करने को आपकी जीवनशैली का सामान्य, स्वाभाविक और सुसंगत हिस्सा कैसे बना सकते हैं? यदि अंदरूनी समस्याएं (उदाहरण, क्षमा न करना, बैर, पूर्वाग्रह, कलह, जलन, प्रतिस्पर्धा

की भावना, असुरक्षा, आदि।) हैं जो आपको कुछ लोगों का आदर करने से रोकती हैं तो उन्हें प्रभु के सामने कबूल करें और उससे बिनती करें कि वह आपको उन बातों से मुक्त करे। आपके हृदय को स्वच्छ और स्वतंत्र रखे कि आप यीशु के नाम में सब लोगों का आदर कर सके और उन्हें आशीष दे सकें।

20
यीशु के नाम में प्रचार करें, सिखाएं और सेवा करें

प्रेरितों के काम 4:17,18

17 परन्तु इसलिए कि यह बात लोगों में और अधिक फैल न जाए, हम उन्हें धमकाएं, कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न करें।
18 तब उन्हें बुलाया और चितौनी देकर यह कहा, यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखलाना।

प्रेरितों के काम 5:28

क्या हमने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? तौभी देखो, तुमने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लोहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो।

प्रारंभिक कलीसिया के बारे में धार्मिक अगुवों को जिस बात का डर था वह था उनका यीशु मसीह के नाम में प्रचार करना, सिखाना और सेवा करना। वे उस नाम का भय रखते थे! यह हमारे समय में भी इतना ही सच है। जब तक हम "यीशु मसीह" के नाम का उल्लेख नहीं करते, तब तक लोगों को अच्छे उपदेशों, संदेशों और प्रेरणादायक व्याख्यानों से कोई आपत्ति नहीं होती। परन्तु बाहरी दबाव और धमकियों ने प्रेरितों को यीशु के नाम में सिखाने, प्रचार करने और सेवा करने से नहीं रोका, और ऐसा ही हमें भी करना है। हमारे जीवन और सेवकाई का आधार, जो कुछ हम प्रचार करते और सिखाते हैं उस नाम में हैं।

यीशु के नाम में प्रचार करने से जीवन बदल जाते हैं, चंगाइयां, आश्चर्यकर्म होते हैं और छुटकारा होता है। उन प्रारंभिक दिनों में

यरूशलेम में यही हुआ।

प्रेरितों के काम 8:5-8,12

5 और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।

6 और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर, और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।

7 क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए।

8 और उस नगर में बड़ा आनंद हुआ।

12 परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था, तो लोग क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।

फिलिप्पुस का पालन-पोषण और प्रशिक्षण यरूशलेम की स्थानीय कलीसिया में हुआ था। सामरिया में उसने मसीह का प्रचार किया, जिसमें परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम के बारे में प्रचार करना शामिल था। फिलिप्पुस ने वही किया जो उसने प्रेरितों को करते हुए देखा था और उसका भी वही परिणाम था। लोग यीशु की ओर फिर गए, आश्चर्यकर्म हुए, दुष्टात्माओं को बाहर निकाला गया, लोग चंगे हुए और उन्होंने बड़े आनंद का अनुभव किया! यह वही है जो यीशु मसीह के नाम में प्रचार करने से होगा।

जैसा कि हम आज प्रचार करते हैं, सिखाते हैं और सेवा करते हैं, हमें यीशु के नाम में ऐसा करना चाहिए। इसका मतलब यह है कि हम ऐसा यीशु का प्रतिनिधित्व करने और यीशु को वास्तव में प्रकट करने के उद्देश्य से करते हैं कि वह वास्तव में कौन है। यीशु के नाम ने अपनी कोई सामर्थ नहीं खोई है, और यदि हम उसके नाम में अपना प्रचार, शिक्षा और सेवकाई सही ढंग से कर रहे हैं, तो हम वही परिणाम देखेंगे जो प्रारंभिक कलीसिया ने देखे था।

हमें यीशु के नाम में हियाव के साथ प्रचार करना है। शाऊल उच्च शिक्षा प्राप्त फरीसी था जो यीशु के नाम के पूरी तरह से खिलाफ था। दमिश्क के मार्ग में यीशु के साथ उसकी सामर्थी मुलाकात के तुरंत बाद *"उसने दमिष्क में कैसे हियाव से यीशु के नाम से प्रचार किया"* (प्रेरितों के काम 9:27,29)।

हममें से हर एक को वह अनुग्रह और बुलाहट पहचानना है जो हमें इसलिए दी गई है ताकि हम उसके नाम के निमित्त राष्ट्रों को छू लें। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने रोमियों 1:5 में लिखा है, *"उसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।"*

जब हम यीशु के नाम में प्रचार करते हैं सिखाते हैं और सेवा करते हैं तब प्रभु यीशु जो कलीसिया का सिर है हमें देखता है। उसके नाम के निमित्त हमारे दृढ़ता, धीरज और अथक परिश्रम को वह देखता है (प्रकाशितवाक्य 2:3)।

तो आइए हम अपने प्रचार, शिक्षा और सेवकाई में यीशु मसीह के नाम के प्रति सच्चे रहें। यदि हम उसका और उसके नाम का उंचे, निर्भीक और सामर्थी नाम में प्रचार नहीं करते हैं, तो हम उसे विफल कर रहे हैं, जिसने हमें उसके नाम का उपयोग करने का विशेषाधिकार दिया है।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 24 के बाद दिया गया है।)

21
यीशु के नाम में चंगा करें

मरकुस 16:17,18
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को
निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे;
18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे
बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

प्रेरितों के काम 3:6,12,16
6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास
है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
12 यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा, हे इस्राएलियो, तुम इस मनुष्य पर क्यों
अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम
ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलता-फिरता कर दिया।
16 और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य
को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो, सामर्थ दी है; और निश्चय उसी
विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा
कर दिया है।

प्रेरितों के काम 4:7,10
7 और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, तुमने यह काम किस सामर्थ से और
किस नाम से किया है?
10 तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम
से, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह
मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है।

याकूब 5:14,15
14 यदि तुममें कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु
के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिए प्रार्थना करें।
15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर

खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी।

यीशु महान वैद्य, सामर्थी चंगाईकर्ता है और उसके नाम में चंगाई है। यीशु ने सारे विश्वासियों को बीमारों को चंगा करने हेतु उसके नाम का उपयोग करने की आज्ञा दी है। अलौकिक चंगाई करने का कोई एक तरीका या प्रणाली नहीं है। हम बीमारों पर हाथ रख सकते हैं, दूर से उनकी सेवा कर सकते हैं, फोन पर उनकी सेवा कर सकते हैं, प्रार्थना का कपड़ा भेज सकते हैं, तेल से अभिषेक कर सकते हैं, आदि। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम सेवा कर रहे हैं यीशु के नाम में। "यीशु" का नाम यीशु को उस स्थान में ले आता है। जब हम बोलते हैं और बीमारी को और रोगों को छोड़ जाने की आज्ञा देते हैं तो हमें जानना चाहिए कि हम यीशु के स्थान पर खड़े हैं, उसका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, और यह यीशु की बराबरी में उस व्यक्ति की सेवा करना है। यदि यीशु उस व्यक्ति की सेवा में शारीरिक रूप से उपस्थित होता तो जो होता उससे हमारी अपेक्षा कुछ भी कम नहीं होनी चाहिए। यीशु के नाम में बीमारों की सेवा करने का यही अर्थ है। हम अपनी सामर्थ या पवित्रता के आधार पर सेवकाई नहीं कर रहे हैं। हम उस अधिकार और सामर्थ में सेवा कर रहे हैं जो यीशु के नाम में है।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 24 के बाद दिया गया है।)

22
यीशु के नाम में अद्‌भुत कामों को करें

मरकुस 9:38,39

38 तब यूहन्ना ने उससे कहा, हे गुरु, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था।
39 यीशु ने कहा, उसको मत मना करो, क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ का काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके।

मरकुस 16:17,18

17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे;
18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

प्रेरितों के काम 4:29-31,33

29 अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।
30 और चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्‌त काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएं।"
31 जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा में परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।
33 और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

यीशु के नाम में आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार हैं। यीशु के नाम में अलौकिक और असामान्य और असंभव बातें घटित हो सकती हैं। प्राकृतिक नियम अस्थाई रूप से रुक सकते हैं। प्राकृतिक क्षेत्र की चीजें, जीवित और बेजान, यीशु के नाम के अधिकार के अधीन हैं।

सभी विश्वासी यीशु के नाम में आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार कर सकते हैं।

प्राकृतिक क्षेत्र की परिस्थितियां, हालातें, भौतिक वस्तुएं उस आज्ञा का उत्तर देंगी जो हम यीशु के नाम में जारी करते हैं, अर्थात हम अपनी मनमर्जी के अनुसार इन बातों को कहते या मनमाने ढंग से नियंत्रित करने के लिए नहीं बोल रहे हैं। हम ऐसे काम नहीं कर सकते। परन्तु जब पिता की इच्छा को हमारे जीवनों में या किसी और के लिए अमल में लाने की ज़रूरत होती है तब हमारे हृदय में हम विश्वास के साथ उठकर यीशु के नाम में आज्ञा का वचन बोल सकते हैं और या प्रार्थना कर सकते हैं और अद्‌त बातें घटित होंगी। यीशु आश्चर्यकर्म करने वाला है। वही है जो आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार करता है। उसने हमें यीशु के नाम का इस्तेमाल करके वह करने का अधिकार दिया है जो वह स्वयं यहां यदि होता तो करता। प्रारंभिक कलीसिया ने इस बात के लिए प्रार्थना की। उन्होंने यीशु के नाम में चिन्ह और चमत्कारों को देखने के लिए विनती की। और उन्होंने ऐसा किया। अब हमारी बारी है।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 24 के बाद दिया गया है।)

23
यीशु के नाम में दुष्टात्माओं को निकालें

लूका 10:17-19
17 वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, आपके नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।
18 उसने उनसे कहा, मैंने शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरता हुआ देखा।
19 देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।

मरकुस 16:17,18
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे;
18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

प्रेरितों के काम 16:16-18
16 जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी।
17 वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी कि ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।
18 वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दुःखित हुआ, और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा, *मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि उसमें से निकल जा।* और वह उसी क्षण निकल गई।

यीशु के नाम में, प्रत्येक विश्वासी के पास दुष्टात्माओं पर ("सांपों और बिच्छुओं") अधिकार है (ग्रीक *'एक्सौसिया'* अर्थात "प्रतिनिधित अधिकार") हमारे पास शैतान की सारी सामर्थ पर (ग्रीक *'डुनामिस'*

अर्थात "अलौकिक सामर्थ") पर अधिकार है। हमें यीशु ने आज्ञा दी है कि उसके नाम में हमें जो अधिकार मिला है उसका इस्तेमाल करके हम दुष्टात्माओं को निकालें। प्रेरितो के काम 16 में हमारे पास उदाहरण है कि हम यह कैसा करते हैं। हम दुष्टात्माओं को यीशु मसीह के नाम में आज्ञा देते हैं कि वे निकल आएं, छोड़कर चले जाएं, या जो वे कर रहे हैं उन्हें करना रोक दें। और वे हमारी आज्ञा मानेंगे।

कई बार दुष्टात्माएं हमारे जीवन में दखल देती हैं और जीवन के किसी क्षेत्र में हमें परेशान करने सताने, दबाने या तकलीफ देने की कोशिश करती हैं। हमें यीशु के नाम में उनके कामों को कठोर शब्दों में और हियाव के साथ डांटना है और रुक कर निकल जाने की आज्ञा देना है। जब हम परमेश्वर के अधीन होते हैं और शैतान का सामना करते हैं तब पवित्र शास्त्र कहता है कि वह डर कर हमसे दूर भाग जाएगा (याकूब 4:7)। हम उन लोगों की सेवा करते समय भी वही करते हैं जो किसी तरह से दुष्टात्माओं के द्वारा सताए जाते हैं।

जब आप यीशु के नाम में दुष्टात्माओं का सामना करते हैं तब आत्मिक क्षेत्र में जो कुछ होता है उसकी कल्पना करने की कोशिश करें। आप भी क्षेत्र में आप मसीह में हैं, परमेश्वर के वारिस और मसीह में संगी वारिस हैं, पिता के दाहिने हाथ पर बैठाए गए हैं, शैतान और हर दुष्टात्मा आपके कदमों के नीचे है। आप यीशु के लहू से छिपाए गए हैं और पवित्र आत्मा से अभिषेक पाए हुए हैं। आपके हाथ में आत्मा की तलवार है और परमेश्वर के शस्त्र-अस्त्र आपकी रक्षा करते हैं। आपकी सहायता के लिए स्वर्गदूतों को तैनात किया गया है। और अब आप यीशु के नाम में कदम आगे बढ़ाते हैं। आप घोषणा करते हैं कि आप यीशु का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, उसके स्थान में काम कर रहे हैं, और उसकी ओर से वह कर रहे हैं जो वह स्वयं करता यदि वह वहां होता। जब आप यीशु के नाम में घोषणा करते हैं तब यीशु वहां होता है। पवित्र आत्मा वहां है। और तब आप दुष्टात्माओं को निकल जाने की

आज्ञा देते हैं। क्या दुष्टात्माएं बच सकती है? वे जिद्दी हो सकती हैं और विरोध करने की कोशिश कर सकती हैं लेकिन आप अच्छी तरह से जानते हैं कि उनके पास बचने का कोई मौका नहीं है। कदापि नहीं! यीशु के नाम में आप जयवंत हैं। उन्हें भागना ही पड़ेगा।

जहां तक विश्वासी की बात है, जब हम यीशु के नाम में अपने आत्मिक अधिकार में काम करते हैं, दुष्टात्माएं हमसे डरती हैं। विश्वासी होने के नाते हमें किसी प्रकार का डर नहीं रखना चाहिए कि दुष्टात्माओं को निकालते समय वे बदला लेने के लिए हम पर आक्रमण करेगी या हम पर हावी होगी। दुष्टात्माओं को निकालने के विषय में यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा कि तुम्हें *"कुछ हानि नहीं होगी"* (लूका 10:19)। इस विषय पर यह अंतिम शब्द है। हम अपेक्षा नहीं करते कि कोई दुष्टात्मा हमें हानि पहुंचा पाएगी। *"हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; परन्तु जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है, और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता"* (1 यूहन्ना 5:18)।

"जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे" (1 यूहन्ना 3:8)। यीशु ने हमें यही करने के लिए अपने नाम में भेजा है। हियाव के साथ यीशु के नाम में दुष्टात्माओं पर अपने अधिकार का उपयोग करें और उनके कामों को नाश करें।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 24 के बाद दिया गया है।)

24
यीशु के नाम में बड़े कामों को करें

यूहन्ना 14:11-14

11 मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो

12 मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

प्रभु यीशु ने पिता के नाम में किए गए आश्चर्यकर्मो पर बहुत ज़ोर दिया। उसने चंगाई, छुटकारा, चिन्ह और अद्‌त कार्यों के अपने आश्चर्यकर्मों का इस प्रमाण के रूप में संकेत किया कि उसे वास्तव में पिता द्वारा भेजा गया था। जैसा कि पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन उद्‌घाटनपर प्रचार में कहा था: *"हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए, जिसे तुम आप ही जानते हो"* (प्रेरितों के काम 2:22)।

प्रभु यीशु ने घोषणा की कि उसके विश्वासी उस तरह के आश्चर्यकर्म करेंगे जो उसने किए और उससे भी बड़े काम। और इस घोषणा के तुरंत बाद उसने विश्वासियों के बारे में कहा जो उसके नाम से बिनती करते हैं। उसके नाम का उपयोग करने के अपने विशेषाधिकार का इस्तेमाल करके हम उसके द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म और उससे भी

बड़े आश्चर्यकर्म करेंगे।

इससे भी बड़े काम यह सूचित करते हैं कि हम केवल उस प्रकार के आश्चर्यकर्मों तक ही सीमित नहीं हैं जो हमारे लिए बाइबल में दर्ज़ हैं। उदाहरण के लिए, लोगों के शरीर में धातु प्रत्यारोपण के गायब होने, या लोगों के शरीर से निकाले गए अंगों का उनके शरीर में फिर से प्रकट होने, लोगों के शरीर में रासायनिक असंतुलन को पुनःस्थापित करने आदि के बारे में लिखा हुआ नहीं है। बात यह है कि हमें उन आश्चर्यकर्मों को देखने के लिए तत्पर होना चाहिए जो आज होते हैं जिनकी बाइबल में समानता या सदृश्यता नहीं है। यीशु ने कहा *"बड़े काम"* (यूहन्ना 14:12) और यह सभी प्रकार के चमत्कारों, चिन्हों और आश्चर्यकर्मों के दायरे को खोलता है जो परमेश्वर हमारे माध्यम से यीशु के नाम में करेगा।

साहसी बनें! यीशु के नाम में बड़े कामों को करने की अपेक्षा करें! यीशु ने कहा हम कर सकते हैं!

यीशु के नाम ने अपनी सामर्थ नहीं खोई है।
यीशु के नाम में चंगाइयां, आश्चर्यकर्म और छुटकारा है।
यीशु के नाम में बड़े बड़े आश्चर्यकर्म हो सकते हैं।

चिंतन

यह अध्याय 20 से 24 के लिए है।

1) यीशु के नाम में आज प्रचार और सेवकाई का वही फल दिखाई देना चाहिए जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में है, क्योंकि यीशु के नाम ने अपनी कोई सामर्थ नहीं खोई है। जब हम यीशु के नाम में प्रचार करते और शिक्षा देते हैं, तो अधिक चमत्कार, चंगाई, छुटकारा, चिन्ह और अद्‌त कार्य देखने के लिए हमें क्या परिवर्तन करने चाहिए?

2) एक विश्वासी के रूप में, अपने आस-पास के लोगों के लिए अलौकिक चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म करने के लिए यीशु के नाम में अपने विशेषाधिकार और अधिकार का उपयोग करने के कुछ तरीके क्या हैं?

25
यीशु के नाम का अनधिकृत उपयोग

मत्ती 7:21-23

21 जो मुझ से, 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेष न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।
22 उस दिन कई मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने आपके नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और आपके नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और आपके नाम से बहुत आश्चर्यकर्म नहीं किए?'
23 तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।

मत्ती 24:5

क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे कि 'मैं मसीह हूं', और बहुतों को भरमाएंगे।

प्रेरितों के काम 19:11-20

11 और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था।
12 यहां तक कि रुमाल और अंगोछे उसकी देह से छुवाकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियां जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाया करती थीं।
13 परन्तु कितने यहूदी जो झाड़ा फूंकी करते फिरते थे, यह करने लगे कि जिनमें दुष्टात्मा हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूंके कि जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूं।
14 और स्क्किवा नामक एक यहूदी महायाजक के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे।
15 पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, यीशु को मैं जानती हूं, और पौलुस को भी पहचानती हूं; परन्तु तुम कौन हो?
16 और उस मनुष्य ने, जिसमें दुष्ट आत्मा थी, उन पर लपक कर, और उन्हें वश में लाकर उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे।

[17] और यह बात इफिसुस के रहने वाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई।
[18] और जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतेरों ने आकर अपने अपने कामों को मान लिया और प्रगट किया।
[19] और जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पोथियां इकट्ठी करके सबके सामने जला दीं, और जब उनका दाम जोड़ा गया, तो पचास हजार रुपये की निकलीं।
[20] इस तरह प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया।

प्रभु यीशु ने उसके नाम के अनधिकृत उपयोग के बारे में चेतावनी दी। सबसे पहले, कुछ लोग हैं जिनके पास आत्मिक अधिकार है, परन्तु गलत माध्यम से। दुष्टात्माएं ऐसे लोगों को सामर्थ देती हैं कि वे धोखा देने वाले चिन्ह और चमत्कार करें (1 तीमुथियुस 4:1; 2 थिस्सलुनीकियों 2:9; 2 कुरिन्थियों 11:13-15)। वे यह सब यीशु के नाम में कर सकते हैं लोगों को धोखा देने के लिए (याद रखें कि नकली असली के समान ही दिखता है)। यीशु मसीह को सचमुच महिमा मिल रही है इसकी असली परख यह है कि क्या लोग यीशु मसीह में व्यक्तिगत विश्वास में लाए जा रहे हैं, क्या इन लोगों का प्रभु यीशु मसीह के साथ सचमुच व्यक्तिगत रिश्ता है, और क्या वे धर्मी जीवनशैली के अनुसार चलते हैं (अधर्म पर चलने के विपरीत)। हम उनके फलों से उन्हें जानेंगे (मत्ती 7:16)। दूसरी बात, स्कीवा के सात पुत्रों के समान, वे लोग हैं जो कुछ लाभ पाने के लिए यीशु के नाम का इस्तेमाल करना चाहते हैं, यीशु के साथ रिश्ता स्थापित किए बिना, और वे ऐसा नहीं कर सकते।

यह सच्चाई कि नकली बातें होगी, हमें भयभीत नहीं होना चाहिए। जब कुछ बहुमूल्य होता है, तभी हम उसकी नकल देखते हैं। नकली की पहचान करने के लिए हमें पूरी तरह से असली में डूबे रहना चाहिए और उसके साथ पूरी तरह से परिचित होना चाहिए। हम नकली के डर से असली को नहीं छोड़ते हैं। बल्कि हम सत्य में

दृढ़ हो जाते हैं। हम यीशु के नाम के अधिकार और सामर्थ में चलना शुरू करते हैं। हम यीशु के साथ अपनी घनिष्ठता के स्थान पर बढ़ते हैं ताकि हम उसके साथ एकता में चल सकें और उसका सटीक रूप से प्रतिनिधित्व कर सकें। हम अपने उद्देश्यों की रक्षा करते हैं और यीशु के नाम के उपयोग के माध्यम से यीशु को प्रकट करना और उसे महिमामंडित करना चाहते हैं।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 29 के बाद दिया गया है।)

26
यीशु के नाम के लिए सताए गए

मत्ती 10:22
और मेरे नाम के कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा।

लूका 21:12,17
12 परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएंगे, और पंचायतों में सौंपेगे, और बन्दीगृह में डलवाएंगे, और राजाओं और हाकिमों के सामने ले जाएंगे।
17 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे।

प्रभु यीशु ने हमें चेतावनी दी कि उसके नाम के निमित्त हम से बैर किया जाएगा और हमें सताया जाएगा। जो हमें सताते हैं वे सोचेंगे कि वे कुछ उत्तम और अच्छे काम कर रहे हैं।

प्रेरितों के काम 5:40-42
40 तब उन्होंने उसकी बात मान ली, और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना।
41 वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिए निरादर होने के योग्य तो ठहरे।
42 और प्रतिदिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रुके।

यीशु के स्वर्गारोहण के बाद जल्द ही प्रेरितों को धार्मिक अगुवों द्वारा धमकी, विरोध और सताव का सामना करना पड़ा। परन्तु, प्रेरितों ने सोचा कि उसके नाम के निमित्त लज्जा सहना आदर की बात है। वे प्रभु यीशु से और उसके नाम से इतना प्रेम करते हैं। प्रारंभिक

कलीसिया ने अत्यधिक सताव का सामना किया, फिर भी वे अपने विश्वास में और यीशु मसीह की सेवा में दृढ़ बने रहे।

उदाहरण के तौर पर, प्रभु यीशु के प्रति और यीशु के नाम के प्रति पौलुस के समर्पण पर विचार करें। जब उसने कैसरिया के विश्वासियों से बात की, जो अत्यधिक चिंतित थे कि उसके यरूशलेम जाने पर क्या होगा, तब: *"पौलुस ने उत्तर दिया, तुम क्या करते हो, कि रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो; मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिए, वरन् मरने के लिए भी तैयार हूं"* (प्रेरितों के काम 21:13)।

काश कि हम अपने प्रभु यीशु से इतना प्रेम करें और उसके नाम से इतना प्रेम करें कि हम बिना लज्जित हुए और बिना डरे हमारे प्रभु के नाम के निमित्त सताव और उपहास का सामना करें। प्रेरित पौलुस ने सताए गए विश्वासियों को लिखा और उन्हें बताया कि *"यदि मसीह के नाम के लिए तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है"* (1 पतरस 4:14)। जब हम सताए जाने पर प्रभु यीशु के नाम को थामे रहते हैं और उसमें और उसके नाम में अपने विश्वास का इन्कार करने से मना करते हैं, तब प्रभु यीशु उस पर ध्यान देता है (प्रकाशितवाक्य 2:13; प्रकाशितवाक्य 3:8)।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 29 के बाद दिया गया है।)

27
यीशु के नाम के लिए बलिदान

मत्ती 19:29
और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहनों या पिता या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा, और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।

प्रेरितों के काम 9:16
और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।

प्रेरितों के काम 15:26
ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिन्होंने अपने प्राण हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए जोखिम में डाले हैं।

ऐसा समय होगा जब हमें स्वेच्छा से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए त्याग करने के लिए बुलाया जाएगा। कुछ लोग संसारिक लाभों को त्याग सकते हैं। कुछ लोग संसारिक रिश्तों को त्याग सकते हैं। कुछ लोग उन्हें प्रभु द्वारा दिए गए कार्य को पूरा करने हेतु कठिनाइयों को सहन करेंगे। कुछ लोग यीशु की सेवा करने के लिए अपने जीवनों को खतरे में डालेंगे। कुछ लोग राज्य के काम को बढ़ाने के लिए बड़ी ज़िम्मेदारी स्वीकार करेंगे। हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के निमित्त हमें सब प्रकार के त्याग या बलिदान करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है या अगुवाई की जा सकती है या बुलाया जा सकता है।

इन सारी बातों में हम हमारे यीशु के प्रेम से प्रेरित हैं, उसके नाम के निमित्त उसके प्रेम के द्वारा, और उन लोगों के लिए जिन्हें परमेश्वर

ने सेवा करने हेतु बुलाया है। *"क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवष कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे भविष्य में अपने लिए न जीएं, परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा"* (2 कुरिन्थियों 5:14,15)। हमारे उद्देश्य पवित्र होने चाहिए। हम मनुष्यों के सामने धर्मी दिखाई देने के लिए या झूठी नम्रता की खातिर या लोगों के सामने दिखावा करने के लिए धर्मी नहीं दिखाई देते। परमेश्वर हमारे हृदयों को देखता है और वह उस जीवन को देखता है जिसे हम प्रेम करते हैं।

जब हम उसके नाम के निमित्त बलिदान करते हैं, तब प्रभु ने कहा कि इस जीवन में हम सौ गुना फल पाएंगे (सुकरम 10:29,30) और आने वाले जगत में आशीष पाएंगे। परमेश्वर किसी का कर्ज़दार नहीं है और वह इस जीवन में हमें वह सब कुछ देगा जिसे पैसों से खरीदा नहीं जा सकता।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए बलिदान करने को एक शुद्ध आनंद और बड़े अधिकार का कारण समझें, क्योंकि हर एक को हमारे प्रभु द्वारा बुलाया गया है।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 29 के बाद दिया गया है।)

28
हम यीशु के नाम को लेकर चलते हैं

प्रेरितों के काम 9:15
परन्तु प्रभु ने उससे कहा, तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है।

प्रेरितों के काम 15:14
हे भाइयो, मेरी सुनो। शमौन ने बताया कि परमेश्वर ने पहले पहल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की कि उनमें से अपने नाम के लिए एक लोग बना ले।

विश्वासियों के नाते, हमारे पास न केवल उसके नाम का उपयोग करने का विशेषाधिकार या हक है बल्कि हमें उसके नाम को लेकर चलने के लिए भी बुलाया गया है। जैसा कि पुरानी वाचा में है, परमेश्वर ने हमें नए नियम की कलीसिया को *"अपने नाम के लिए एक लोग"* के रूप में बुलाया है। हममें से हर एक उसका नाम लेकर चल रहा है और जैसा कि याकूब लिखता है *"वह उत्तम नाम जिसके तुम कहलाए जाते हो"* (याकूब 2:7)। विश्वासी होने के नाते हम यीशु के उस अद्‌त, सुंदर, योग्य, आदरणीय और प्रतापमय नाम से जाने जाते हैं।

2 थिस्सलुनीकियों 1:12
कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुममें महिमा पाए, और तुम उसमें।

हम जिस तरह से अपना जीवन बिताते हैं, हमारा चालचलन, हमारी वाणी, हमारा आचरण, हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम गौरवान्वित हो। लोगों को हमारे

जीवन का निरीक्षण करना चाहिए और यीशु के नाम की स्तुति करनी चाहिए। विश्वासियों के रूप में हम पाप में नहीं जी रहे हैं या परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाले कार्य नहीं कर रहे हैं। पवित्र शास्त्र में निर्देश स्पष्ट और सरल है। *"जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे"* (2 तीमुथियुस 2:19)।

उदाहरण के तौर पर हमारे काम के स्थान पर, हमें ऐसे आचरण करना चाहिए जिससे यीशु का नाम आदर पाए। पौलुस ने लिखा : *"हर कर्मचारी को सिखाएं कि वह अपने नियोक्ताओं का आदर करे, क्योंकि यह रवैया परमेश्वर के सत्य और बड़े नाम की स्पष्ट गवाही देता है"* (1 तीमुथियुस 6:1, जैसा कि अंग्रेजी बाइबल संस्करण-द पैशन ट्रांस्लेशन में अनुवादित है)।

यह जानकर कि हम उसके नाम को लेकर चलते हैं, और उसके प्रति प्रेम के कारण हम इस तरह से जीवन बिताते हैं जिससे उसके योग्य और अतुलनीय नाम को महिमा, आदर और स्तुति मिलती है।

(इस पर **चिंतन** अध्याय 29 के बाद दिया गया है।)

29
यीशु के नाम में समझाएं

1 कुरिन्थियों 1:10
हे भाइयो, मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुममें फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।

2 थिस्सलुनीकियों 3:6
हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो अनुचित चाल चलता, और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं करता।

हम नए नियम में देखते हैं कि आत्मिक अगुवे, पौलुस ने प्रभु यीशु मसीह के नाम में उन विश्वासियों को जिनकी आत्मिक ज़िम्मेदारी उस पर थी, डांटा, सुधारा और उपदेश दिया। अर्थात उसने यह प्रेम से किया। उसने यह उनकी भलाई के लिए किया और उनकी उन्नति के लिए किया। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उसने यह यीशु मसीह के नाम में किया, अर्थात कलीसिया के सिर यीशु मसीह की ओर से किया। इसलिए पौलुस स्वामी के हृदय को विश्वासियों पर प्रगट कर रहा था। इसका मतलब यह भी था कि जो पौलुस के आत्मिक नेतृत्व में थे, जब उन्होंने यह ताड़ना या शिक्षा पाई तब उन्हें उसे भययुक्त आदर के साथ थामे रहना था और उसे तुच्छ नहीं समझना था। हममें से जो आत्मिक अगुवे हैं उनकी यह पवित्र ज़िम्मेदारी है कि विश्वासियों को यीशु के नाम में प्रेम के साथ समझाएं।

[**टिप्पणी :** हमें यहां पर सावधान रहना चाहिए और किसी भी आत्मिक अगुवे को अधिकार जताने का बहाना बनाकर यीशु के नाम का

उपयोग करते हुए हम पर नियंत्रण करने, हमारे साथ चालाकी करने, या दुर्व्यवहार करने की अनुमति न दें (1 पतरस 5:2-4) ।]

जब हमें यीशु के नाम में सताया जाता है
या त्याग करने हेतु बुलाया जाता है
तब हम उसे आदर का कारण समझते हैं।
हम उसके नाम से जाने गए हैं
और इसलिए हम आदर के साथ
उसके नाम को लेकर चलते हैं।

चिंतन

यह अध्याय 25 से 29 के लिए है।

1) इस पर विचार करें कि शैतान नकली का निर्माण क्यों करता है जो वास्तव में प्रभु यीशु के नाम का उपयोग करते हैं लेकिन शैतानी रूप से सशक्त हैं? विश्वासियों के रूप में हम यीशु के नाम के ऐसे नकली उपयोगों को कैसे पहचान सकते हैं और पता लगा सकते हैं?

2) क्या आपने प्रभु यीशु के नाम के लिए सताव का अनुभव किया है? आपने इसके माध्यम से कैसे यात्रा की? क्या आप अपने संकल्प में दृढ़ हैं कि आप कभी भी विश्वास का इनकार नहीं करेंगे और कभी भी उसके नाम का इन्कार नहीं करेंगे, यहां तक कि सताव का भी सामना नहीं करेंगे जिससे आपके जीवन को खतरा है?

3) क्या आपको प्रभु के नाम के निमित्त, उसके राज्य के कार्य के

लिए त्याग करने के लिए या किसी रीति से उसकी सेवा करने हेतु बुलाया गया है? आप उसमें से कैसे आगे बढ़े? क्या आप यीशु से इतना प्रेम करते हैं कि आप उसके नाम के निमित्त किसी भी तरह का त्याग करने के लिए तत्पर हैं जिसे करने के लिए वह आपको बुलाता है?

4) हमें ऐसे लोगों के रूप में बुलाया गया है जो उसके नाम से जाने जाते हैं। क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जहां आप जानते हैं कि यीशु को आदर मिलता है और उसकी महिमा की जाती है? क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जो यीशु के नाम को आदर या महिमा नहीं देते जिसके लिए आपको बुलाया गया है? सकारात्मक बातों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने हेतु कुछ समय दें और उससे बिनती करें कि वह नकारात्मक बातों को बदल दे, ताकि यीशु का नाम आपके जीवन के सभी क्षेत्रों के माध्यम से महिमा पाए।

5) अध्याय 3 में रेखांकित पुराने नियम के प्रभु के नाम का प्रतिदिन के जीवन में पुनरीक्षण करें, और वह सब कुछ भी जो आपने नए नियम में पाया है (अध्याय 10-29)। प्रभु के नाम के इस्तेमाल में आप कौन सी समानताएं पाते हैं?

30
यीशु का नाम सदा के लिए है

बाइबल की अंतिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, यह बताते हुए शुरू होती है कि यह यीशु मसीह द्वारा दिया गया एक प्रकाशन है। यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में आशीष के साथ समाप्त होता है। प्रकाशितवाक्य की सम्पूर्ण पुस्तक में हम कई नामों और उपाधियों को देखते हैं जिनके द्वारा प्रभु यीशु का उल्लेख किया जाता है:

- *विश्वासयोग्य गवाह, मृतकों में से जी उठने वालों में पहिलौठा, राजा* (प्रकाशितवाक्य 1:5)
- *अल्फा और ओमेगा, आदि और अंत* (प्रकाशितवाक्य 1:8),
- *प्रथम और अंतिम* (प्रकाशितवाक्य 1:11),
- *यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद का मूल* (प्रकाशितवाक्य 5:5),
- *मेम्ना* (प्रकाशितवाक्य 5:12),
- *परमेश्वर का वचन* (प्रकाशितवाक्य 19:13),
- *राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु* (प्रकाशितवाक्य 19:16),

आदि ...

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि यीशु ने अपने लिए एक नया नाम होने का उल्लेख किया है ।

प्रकाशितवाक्य 3:12
जो जय पाए उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊंगा, और वह

फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात् नए यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरनेवाला है, और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा।

"अपना नया नाम" क्या है? यह एक रहस्य है। क्या यह यीशु का नाम है, एक ऐसा नाम जो देहधारण से पहले उसके पास नहीं था और जो उसके जन्म के समय उसे दिया गया था और जो उसने पूरा किया उसके कारण उसे प्रदान किया गया था? क्या यह दूसरी उपाधि है जिसे पवित्रशास्त्र इस समय प्रकट नहीं करता है जो उसे प्रदान की जाएगी? हम नहीं जानते। हम यह कह सकते हैं, कि वचन 12 (ग्रीक *'कैनोस')* में प्रयुक्त *"नया"* शब्द चरित्र, प्रकृति, गुणवत्ता, ताजगी में नया है जो "नए" (ग्रीक *'नियोस'*) से भिन्न है जो समय में नए का, हाल ही का उल्लेख करता है।

"हमेशा के नगर" नए यरूशलेम के अंतिम अध्याय में परमेश्वर के सभी लोगों के माथे पर उसका नाम है। यह एक संकेत है कि हम उसके, हमारे प्रभु यीशु मसीह के, हमेशा के लिए हैं।

प्रकाशितवाक्य 22:1-5

1 फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी।

2 और नदी के इस पार, और उस पार, जीवन का पेड़ था। उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।

3 और फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे,

4 और उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा।

5 और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा; और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।

हमारे पास उस नाम को सदा के लिए रखने का अधिकार होगा!

इस कारण
परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया,
और उस को वह नाम दिया
जो सब नामों में श्रेष्ठ है।
कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है;
वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये
हर एक जीभ अंगीकार कर ले
कि यीशु मसीह ही प्रभु है।
फिलिप्पियों 2:9-11

आमेन!

चिंतन

1) आपने यह पुस्तक पढ़कर पूरी कर ली है। बहुत बढ़िया! कृपया इस पुस्तक के माध्यम से यात्रा करते समय यीशु के नाम के बारे में आपने जो कुछ भी खोजा है, उसकी समीक्षा करने और उस पर चिंतन करने के लिए समय निकालें। आपने अपने आत्मिक जीवन में कौन सी प्रमुख शिक्षाओं को आत्मसात किया है? कुछ सत्य क्या हैं जिन्हें आपने परमेश्वर के साथ अपने चलने के स्थायी भाग के रूप में अपनाया है?

2) जब हम किसी विषय की बार-बार समीक्षा करते हैं तो हम चीजों

की खोज करते हैं, हम सत्य के नए पहलुओं को उजागर करते हैं, हम आगे प्रकाशन प्राप्त करते हैं और जो हमने पहले ही सीखा है उसमें हम मजबूत होते हैं। **"यीशु का सामर्थी नाम"** पर इस सत्य को बार-बार देखें। जल्द ही इस पुस्तक को फिर से पढ़ने की योजना बनाएं। इसे अपने कैलेंडर में लिख लें।

3) अनुभव होने पर सत्य सबसे अच्छा सीखा जाता है। यीशु के सामर्थी नाम की सामर्थ के अपने अनुभव में बढ़ते रहें।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है —जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

***"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (प्रेरितों के काम 10:43)।**

***"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "*(रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली ,वचन पर केंद्रित ,आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया ,एक प्रशिक्षण संस्थान ,मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेलभेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Giving Birth to the Purposes of God
Gifts of the Holy Spirit
God Is a Good God
God's Word–The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Interpreting Scripture
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work–Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं ,और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: chrysalislife.org_
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

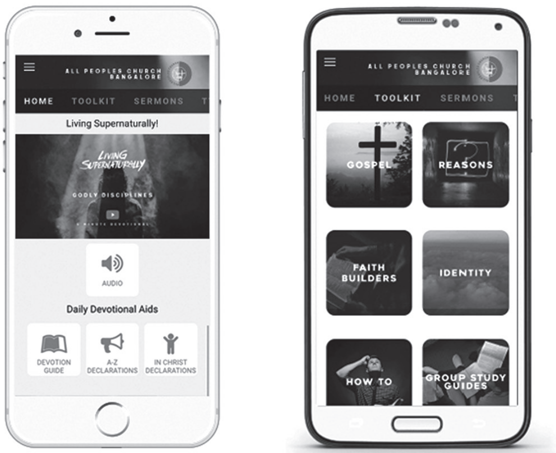

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:

ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें
“ऑल पीपुल्स चर्च (APCWO)”/
All Peoples Church Hindi

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।
अगर आपको यह पसंद आए, तो
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी)में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (D.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस:** कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज ,पाठ्यक्रम ,पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

प्रत्येक विश्वासी को यीशु के सामर्थी नाम को पुकारने, उस नाम से बोलने और उसका उपयोग करन का अद्भुत विशेषाधिकार प्राप्त हुआ है। यीशु के चेलों और प्रारंभिक कलीसिया के विश्वासियों ने उस अधिकार को समझा जो यीशु के नाम के उपयोग के माध्यम से उन्होंने पाया था, और वे उसमें चले।

यह पुस्तक विश्वासी को यीशु के नाम की सामर्थ को फिर से खोजने में मदद करने का प्रयास करती है और सिखाती है कि रोज़मर्रा की जिंदगी में उस नाम की सामर्थ में कैसे चलना है। जब हम यीशु के नाम की सामर्थ में चलना सीखते हैं तब हम अधिकार और प्रभुता में, पूर्ण शांति और परमेश्वर के सभी प्रावधानों में चल सकते हैं।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org